गायत्री चित्रावली

श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००

लेखक :

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मूल्य : १२.०० रुपये

पुनरावृत्ति सन् २०१५

मुद्रक :

युग निर्माण योजना प्रेस

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

भूमिका

गायत्री की महिमा अपार है । वह भूलोक की कामधेनु है । संसार का कोई कष्ट ऐसा नहीं जो माता की कृपा से न कट सके और विश्व की कोई वस्तु ऐसी नहीं जो माता के अनुग्रह से प्राप्त न हो सके । हमने पिछले २४ वर्षों से लगभग २००० आर्य धर्म–ग्रंथों का अन्वेषण किया है और यह पाया है कि गायत्री से बड़ी शक्ति, साधन क्षेत्र में दूसरी और नहीं है । यही चारों वेदों की माता है । भारतीय संस्कृति के समस्त ज्ञान–विज्ञान की यही आधारशिला है । इस ज्ञान–गंगा में स्नान करने वाली आत्मा के समस्त पाप कट जाते हैं ।

हमने चौबीस–चौबीस लक्ष के अब तक चौबीस पुरश्चरण किए हैं । इस तपश्चर्या के जो व्यक्तिगत अनुभव हुए हैं, उनसे हमारी यह अटूट मान्यता हो गई है कि सांसारिक समस्त संपत्तियों की अपेक्षा गायत्री उपासना अधिक मूल्यवान है । इसी प्रकार जिन लोगों ने हमारे संरक्षण, सहयोग एवं परामर्श से माता की आराधना की है उनके परिणामों को देखते हुए भी हमें दृढ़ विश्वास है कि कभी किसी की गायत्री साधना निष्फल नहीं जाती । इस युग में इससे अधिक फलदायक, सरल, स्वल्प–श्रम–साध्य एवं हानि रहित साधना दूसरी नहीं है ।

महामहिमामयी सर्वशक्तिमान् गायत्री माता का महत्व समझाने एवं साधकों को ध्यान करने में सहायता करने वाली इस पुस्तक को प्रकाशित करते हुए हमें आशा है कि इससे गायत्री उपासना करने वालों को प्रेरणा एवं सुविधा प्राप्त होगी । किस प्रयोजन के लिए माता का किस स्वरूप, किस वर्ण, किस आकृति, किस मुद्रा, किस वाहन किस स्थान में किस प्रकार ध्यान करना चाहिए, यह सब रहस्य इन चित्रों में भली प्रकार प्रकट कर दिया है ।

हर चित्र के साथ में उसके संबंध में आवश्यक जानकारी देने वाला चित्र–परिचय भी लगा दिया है, जिससे पाठक तत्संबंधी आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकें । साधना के समय इन चित्रों का ध्यान भी किया जा सकता है ।

–श्रीराम शर्मा आचार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१ गायत्री महामन्त्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

१-गायत्री महामंत्र

गायत्री के अक्षरों का आपसी गुंथन, स्वर–विज्ञान और शब्दशास्त्र के ऐसे रहस्यमय आधार पर हुआ है कि उसके उच्चारण मात्र से सूक्ष्म शरीर में छिपे हुए अनेक शक्ति–केन्द्र अपने आप जागृत होते हैं । सूक्ष्म देह के अंग–प्रत्यंगों में अनेक चक्र–उपचक्र, ग्रंथियाँ, मातृकाएँ, उपत्यकाएँ, भ्रमर मेरु आदि ऐसे गुप्त संस्थान होते हैं जिनका विकास होने से साधारण–सा मनुष्य प्राणी अनंत शक्तियों का स्वामी बन सकता है ।

गायत्री मंत्र उच्चारण जिस क्रम से होता है, उससे जिह्वा, दाँत, कंठ, तालू, ओष्ठ, मूर्धा आदि से एक विशेष प्रकार के ऐसे गुप्त स्पंदन होते हैं जो विभिन्न शक्ति केन्द्रों तक पहुँचकर उनकी सुषुप्ति हटाते हुए चेतना उत्पन्न कर देते हैं । इस प्रकार जो कार्य योगी लोग बड़ी कष्टदायक साधनाओं और तपस्याओं से बहुत काल में पूरा करते हैं, वह महान कार्य बड़ी सरल रीति से गायत्री के जप मात्र से स्वल्प समय में ही पूरा हो जाता है ।

साधक और ईश्वर सत्ता गायत्री माता के बीच में बहुत दूरी है, लंबा फासला है । इस दूरी एवं फासले को हटाने का मार्ग इन २४ अक्षरों के मंत्र से होता है । जैसे जमीन पर खड़ा हुआ मनुष्य सीढ़ी की सहायता से ऊँची छत पर पहुँच जाता है वैसे ही गायत्री का उपासक इन २४ अक्षरों की सहायता से क्रमशः एक–एक भूमिका पार करता हुआ, ऊपर चढ़ता है और माता के निकट पहुँच जाता है ।

गायत्री का एक–एक अक्षर एक–एक धर्म शास्त्र है । इन अक्षरों की व्याख्या स्वरूप ब्रह्माजी ने चारों वेदों की रचना की और उनका अर्थ बताने के लिए ऋषियों ने अन्य धर्म–ग्रंथ बनाए । संसार में जितना भी ज्ञान–विज्ञान है वह बीज रूप से इन २४ अक्षरों में भरा हुआ है । एक–एक अक्षर का अर्थ एवं रहस्य इतना व्यापक है कि उसे जानने में एक–एक जीवन लगाया जाना भी कम है । इन २४ अक्षरों के तत्व ज्ञान को जो जानता है उसे इस संसार में और कुछ जानने योग्य नहीं रहता ।

गायत्री सबसे बड़ा मंत्र है । उससे बड़ा और मंत्र नहीं । जो कार्य संसार के अन्य किसी मंत्र से हो सकता है वह गायत्री से भी अवश्य हो सकता है । इससे वेदोक्त दक्षिण मार्ग और तंत्रोक्त वाम मार्ग दोनों ही प्रकार की साधना हो सकती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

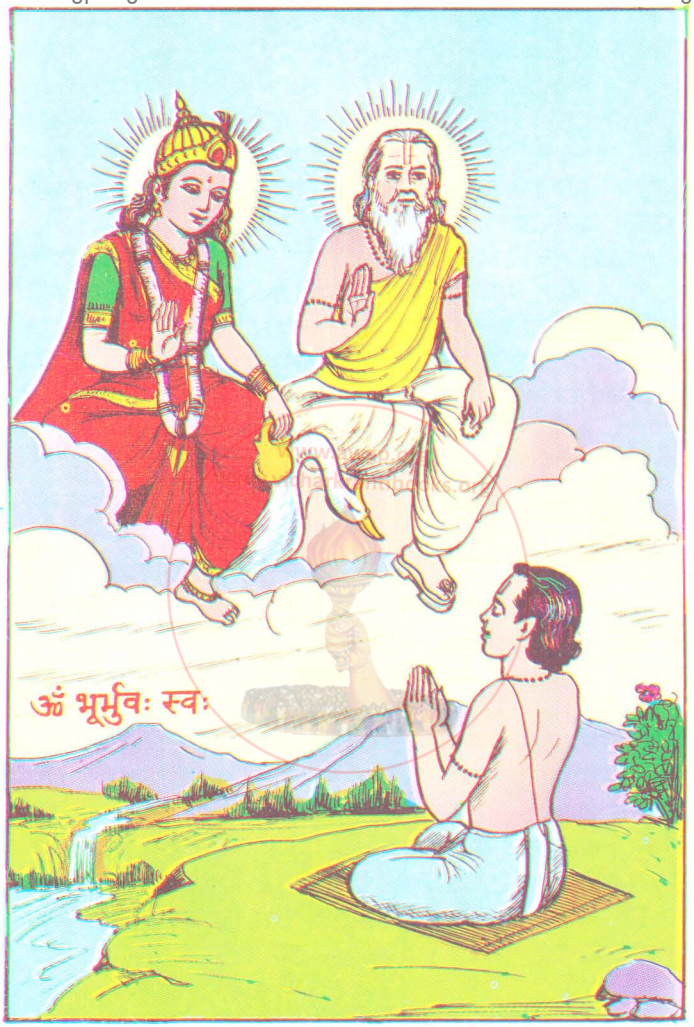

२- आध्यात्मिक माता पिता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

२-आध्यात्मिक माता-पिता

माता–पिता के रज–वीर्य से सभी प्राणियों का जन्म होता है । दूसरे जन्म का होना, जिसे द्विजत्व कहते हैं, मनुष्य की वास्तविक विशेषता है । यह दूसरा जन्म गायत्री माता और आचार्य पिता की दिव्य शक्तियों के समन्वय से होता है । यज्ञोपवीत संस्कार और गुरु–मंत्र की विधिवत् दीक्षा इस दूसरे जन्म की द्विजत्व की घोषणा समझी जाती है । इस घोषणा के बिना किसी को गायत्री का अधिकार नहीं मिलता । शास्त्रों में इसीलिए कहा गया है कि गायत्री का अधिकार द्विजों को है ।

'निगुरा' (बिना गुरु का) भारतीय समाज में एक गाली है, क्योंकि हर मनुष्य को अपने मानसिक विकास, सुधार, परिमार्जन, अंकुर एवं निर्माण के लिए एक सुयोग्य अनुभवी, सच्चरित्र विद्वान् व्यक्ति की सुसंबद्ध सहायता की आवश्यकता होती है । जिसे यह सहायता प्राप्त नहीं वह सुसंस्कृत कैसे बनेगा ? प्राचीनकाल में हर व्यक्ति का एक धर्म गुरु होता था । १–माता, २–पिता, ३–आचार्य, इन्हें केवल ब्रह्मा, विष्णु और महेश की उपमा दी गई है ।

कहा गया है कि गायत्री मंत्र कीलित है, जब तक उसका उत्कीलन न हो तब तक वह सफल नहीं होता । उत्कीलन का वास्तविक तात्पर्य है, प्राण दीक्षा द्वारा मंत्र का शक्ति–स्फुल्लिंग अपने अंतराल में स्थापित करना । जैसे होली की अग्नि लाकर लोग अपने घरों की छोटी होली जलाते हैं, उसी प्रकार किसी गायत्री के नैष्ठिक उपासक से उसकी चिनगारी लेकर दीक्षा विधि द्वारा भीतर स्थापित की जाती है तो साधना में आशाजनक सफलता मिलती है । केवल २४ अक्षर याद कर लेने मात्र से काम नहीं चलता ।

साधन को अपनी साधना में गायत्री माता और गुरु पिता को अपने आत्मिक द्वितीय जन्म का प्रसवित मानना चाहिए, दोनों के प्रति श्रद्धा रखने वाला साधक इस महामंत्र की साधना में सफल हो सकता है । एकांगी साधना वाला व्यक्ति ठीक प्रकार पथ–प्रदर्शन एवं प्रकाश प्राप्त न होने से अपना बहुमूल्य समय निष्फल गँवाता रहता है ।

गायत्री शक्तिमान है, पर उस शक्ति का जागरण गुरु द्वारा होता है । निगुरा साधक बहुत प्रयत्न करने पर भी स्वल्प परिणाम प्राप्त करता है । इसीलिए उपासकों को उचित है कि आध्यात्मिक माता–पिता के लिए गायत्री और गुरु के लिए समुचित श्रद्धा रखें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

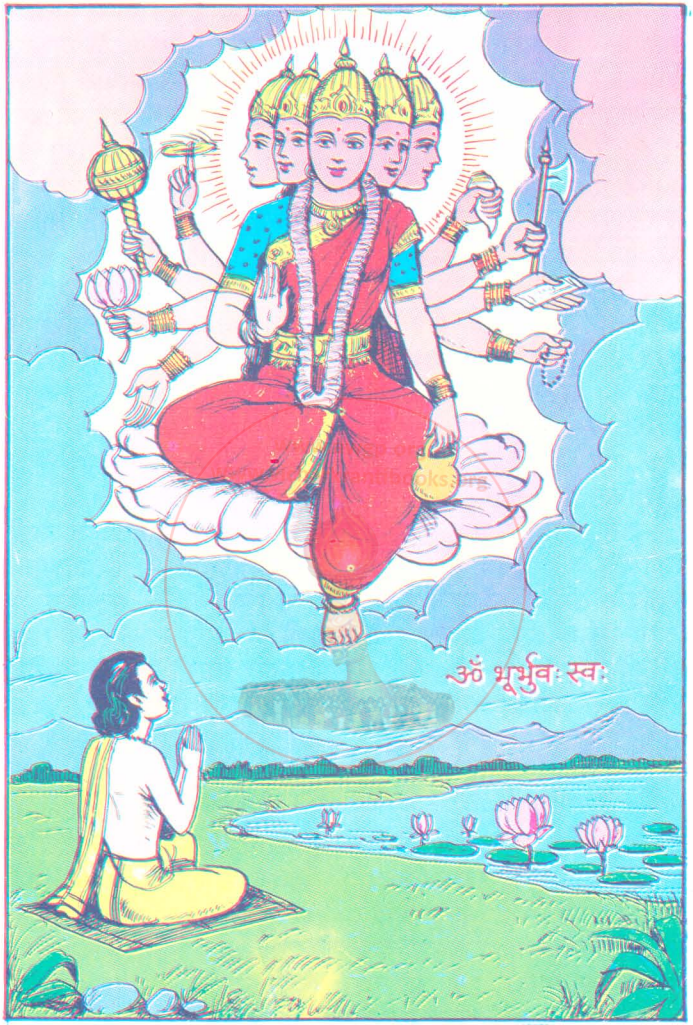

३. पंचमुखी और दशभुजी महाशक्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

३- पंचमुखी, दशभुजी महाशक्ति

गायत्री की शक्ति गति, क्रिया और प्रतिक्रिया को देखते हुए सूक्ष्म–दर्शी ऋषियों ने उसका चित्रण पंचमुखी और दशभुजी रूप में किया है । प्रणव, व्याहृति और मंत्र के तीन भाग यह गायत्री के पाँच मुख हैं । पाँच देव भी इन पाँच मुखों के प्रतीक हैं । पाँच तत्वों से बना हुआ शरीर और पाँच प्राण, पाँच उप–प्राण, पाँच तन्मात्राएँ, पाँच यज्ञ, पाँच अग्नि, पंच क्लेश आदि अनेक पंचकों का रहस्य, मर्म और तत्वज्ञान गायत्री मंत्र के मुख से मुखरित होता है । विश्वव्यापी यह पाँच समस्याएँ सुलझाने के लिए गायत्री के पाँच अंगों में समस्त ज्ञान–विज्ञान मौजूद देखकर ऋषियों ने उसे पाँच मुखी चित्रित किया ।

पाँच मुखों का रहस्य जानकर साधक अपने सांसारिक जीवन में स्वास्थ्य, धन, विद्या, चातुर्य तथा दूसरों का सहयोग प्राप्त करता है और आत्मिक क्षेत्र आत्मज्ञान, आत्म–दर्शन, आत्म–अनुभव, आत्म–लाभ और आत्म–कल्याण का अधिकार बनता है । यह पाँच सांसारिक लाभ गायत्री की बाँई पाँच भुजा हैं और यह आत्मिक पाँच लाभ दाहिनी पाँच भुजाएँ हैं । दशभुजी गायत्री का चित्रण इसी आधार पर हुआ है । जैसे पूर्व, पश्चिम आदि १० दिशाएँ होती हैं वैसे ही जीवन विकास की भी दस दिशा हैं । माता के दस हाथ साधक को उन दशों दिशाओं में समुन्नत करते हैं ।

पंचमुखी और दशमुखी गायत्री का जो वर्णन ग्रंथों में मिलता है वह एक भावना चित्र है, जिससे यह प्रकट होता है कि गायत्री की शक्ति, महिमा और प्रतिक्रिया मानव जीवन में किस प्रकार प्रकट होती है और उसमें कितने प्रकार के रहस्य छिपे हुए हैं, यह एक अलंकारिक रूप है । वास्तव में माता शक्ति रूप है, उसका कोई रूप नहीं । वह शब्द, रूप आदि पंचभौतिक तत्वों से परे है । केवल ध्यान द्वारा उसको अपनी ओर आकर्षित करने के लिए किसी रूप या प्रतिमा की धारणा की जाती है ।

गायत्री के पाँच मुख हैं, दस भुजाएँ हैं, इतना ही नहीं उसके सहस्त्रों नेत्र, सहस्त्रों कान, सहस्त्रों चरण, सहस्त्रों हाथ हैं । वह सर्वव्यापिनी, अंतर्यामिनी, सर्वशक्तिशाली एवं महामहिमामयी है । इससे संबंधित ज्ञान–विज्ञान का समुद्र इतना गहरा है कि मनुष्य की बुद्धि उसे पार करने में असमर्थ ही रहती है । उसका तो आशीर्वाद ही अभीष्ट है जो माता का कृपा पात्र है उसी पर सब रहस्य प्रकट होते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

४ ब्रह्माणी- ब्रह्म विद्या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

४-ब्रह्माणि (ब्रह्म-विद्या)

ईश्वर की अनंत शक्तियों में से दिव्य ज्ञान का प्रकाश करने वाली परम सतोगुणी शक्ति को ब्रह्माणी, ब्राह्मणी या ब्रह्म–विद्या कहते हैं । ब्रह्माजी ज्ञान के देवता है, वेदज्ञान, तत्वज्ञान उन्हीं के द्वारा निःसृत होता है । ब्रह्मा के चार मुख चारों वेदों के प्रतीक हैं । धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के चारों फल इस ज्ञान के आधार पर ही प्राप्त होते हैं । चार अवस्था, चार आश्रम, चार वर्ण, जीवों के चार वर्ग संसार की चार दिशाएँ आदि चतुर्वर्गों की संपूर्ण समस्याएँ ब्रह्मज्ञान के आधार पर ही होती हैं इसलिए ब्रह्माजी की–ब्रह्म विद्या को चतुर्मुखी कहा गया है ।

ब्रह्मा की शक्ति ब्राह्मी है । किसी देवता, जीव या पदार्थ की शक्ति ही उसका सार है । शक्ति न रहे तो उसका नाम शेष रह जाता है, दूसरों को लाभ पहुँचाना तो दूर वह अपने अस्तित्व की रक्षा भी नहीं कर सकता है । इसलिए ब्रह्मा की क्षमता भी उसकी ब्राह्मी शक्ति में ही मानी गई है । साधक इस सूक्ष्म भाग की, सार अंश की उपासना करते हैं । ब्रह्मा की अपेक्षा ब्राह्मी शक्ति की महत्ता इसलिए अधिक है कि वह एक विस्तृत देव–तत्व का निचोड़ा हुआ अत्यंत प्रभावपूर्ण तत्व है । गायत्री को इसलिए ब्राह्मी कहते हैं कि वह ब्रह्मज्ञान की केन्द्रीय तत्व शक्ति है ।

गायत्री के ब्राह्मी स्वरूप की उपासना करने से साधक के अंतः करण में ब्रह्मज्ञान, तत्वबोध, ऋतंभरा प्रज्ञा एवं सूक्ष्म दृष्टि का आविर्भाव होता है, जिससे माया का अज्ञानांधकार हट जाता है और जीव, प्रकृति एवं ईश्वर का पारस्परिक संबंध भली प्रकार समझ में आ सकता है । जो ज्ञान असंख्यों ग्रंथ पढ़ने और हजारों विद्वानों के प्रवचन सुनने से प्राप्त नहीं होता वह ब्राह्मी शक्ति की कृपा से साधक की अंतःभूमि में स्वयंमेव प्रकट हो जाता है । उस महाशक्ति द्वारा फेंकी हुई ज्ञान किरण जब मनुष्य के मानस तथा हृदय में प्रवेश करती है तो उसके दिव्य प्रकाश में सत्य का, आत्मा का साक्षात्कार होता है ।

ब्रह्मज्ञान हो जाने का फल है–जीवन मुक्ति । आत्मा स्वयं आनंद स्वरूप है, आत्म–ज्ञान होने के साथ–साथ साधक को ब्रह्मानंद का ऐसा रसास्वादन होता है जिसकी तुलना में संसार के समस्त रस उसे अत्यंत तुच्छ प्रतीत होते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्

५ परम पोषक वैष्णवी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

५-परम पोषक वैष्णवी

परमात्मा का रजोगुणी रूप विष्णु है, विष्णु की शक्ति को वैष्णवी कहते हैं । विष्णु का वाहन गरुड़ है । वैष्णवी भी गरुड़ पर आसीन हैं । गरुड़ रजोगुणी का प्रतिनिधि है । वैष्णवी इसी रजोगुणी से प्राणी को जीवन का रस पिलाकर उसे परिपुष्ट करती है ।

माता अपने बालक पर सब कुछ निछावर करती है । उसकी गोदी में पहुँचकर वह सब प्रकार से निश्चिंत और निर्भय हो जाता है । माता प्रिय से प्रिय वस्तु उसे देने में संकोच नहीं करती, परंतु ऐसा तभी होता है जब बालक सर्वतोभावेन अपने को माता के प्रति अर्पण कर देता है जब तक बालक पूर्णतया माता पर अवलंबित रहता है तब तक वह उसे एक क्षण के लिए भी नहीं भूलती ।

जैसे–जैसे बालक अपना स्वार्थ पहचानने लगता है, वैसे–वैसे वह माता की उपेक्षा का पात्र बनता जाता है । देखा गया है कि जब वही बालक बड़ा हो जाता है तो माता के स्नेह को, वात्सल्य को भूल जाता है, उसके मन में कृतज्ञता एवं श्रद्धा–बिल्कुल नहीं रहती, स्वाभाविक एवं सच्ची शक्ति से वह कभी माता के चरणों पर अपना मस्तक नहीं नवाता है । हाँ जब कुछ मतलब निकलता होता है तो चिकनी–चुपड़ी बात बनाकर माता से अपना स्वार्थ सिद्ध करा लेने का जाल बिछाता है । अनेक साधक भी ऐसा ही करते हैं । उनमें आद्यशक्ति, जगज्जननी के प्रति स्वाभाविक श्रद्धा–भक्ति का एक कण भी नहीं होता, पर जब कुछ काम अटकता है तो उसी सहायता के लिए नाना प्रकार से दंडौत करते हैं । माता घट–घट वासिनी है । वह सच्चे और झूठे निःस्वार्थ भक्त और चापलूसी का अंतर भली प्रकार जानती है । खुदगर्जों के सामने वह कभी–कभी एक टुकड़ा भी फेंक देती है कभी–कभी दुत्कार भी देती है । जो हो, ऐसे लोगों के प्रति उसके मन में सच्ची ममता कदापि उत्पन्न नहीं होती ।

सच्चा भक्त माता से वस्तुएँ नहीं माँगता उसका प्रेम माँगता है । अपना सर्वस्व माता को सौंप देता है और उसकी गोदी में नवजात शिशु की तरह निश्चिंत होकर विश्राम करता है । ऐसा भक्त निश्चय ही अपने को अनंत शांति की गोद में अनुभव करता है । उसे माता का सच्चा प्रेम और संरक्षण प्राप्त होता है । सर्व शक्तिमान माता की गोद में किलोल करता है उसे कोई अभाव एवं कष्ट पीड़ित नहीं कर सकता । वैष्णवी रहता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

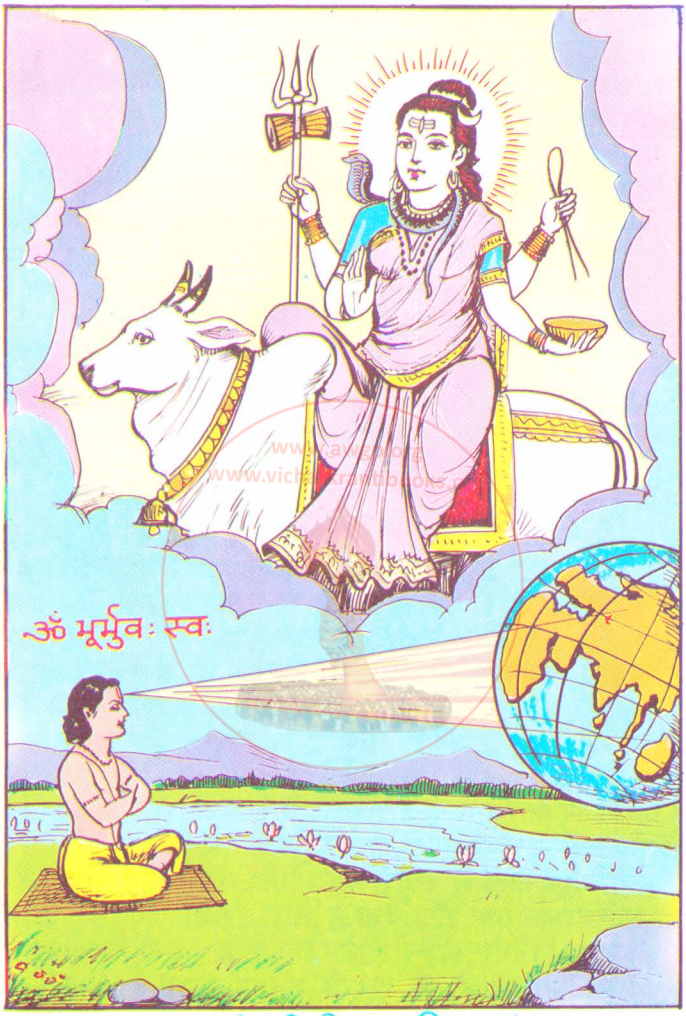

६. शांभवी दिव्य शक्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

६-शांभवी दिव्य शक्ति

शिव को योगेश्वर भी कहते हैं । योग की समस्त शक्तियों और सिद्धियों के उद्‌गम केन्द्र वे ही हैं । मस्तक पर चंद्रमा तत्वज्ञान का प्रतिनिधि है । गले में सर्पों का होना, दुष्ट और पतितों को भी कंठों से चिपटाने की साधुता का द्योतक है । वृषभ वाहन मजबूती, दृढ़ता, स्थिर चित्त, श्रमशीलता एवं पवित्रता का प्रतीक है । शिव इन्हीं गुणों के समूह हैं । वे संहारक हैं, दोष, दुर्गुण, अनाचार, अविचार और अनुपयुक्तता का संहार करते हैं । अनावश्यक का निवारण और आवश्यक का संहार करने का कार्य ईश्वर के शिव स्वरूप द्वारा होता है । शिव की चेतावनी और गतिशीलता को शांभवी शक्ति कहते हैं ।

गायत्री के शांभवी स्वरूप का आश्रय लेने से जो गुण शिव के हैं शांभवी के हैं उन्हीं का प्रसाद साधक को भी मिलता है । वह शिवजी की ओर बढ़ता है और त्याग, वैराग्य, संयम, साधुता के अतिरिक्त योग की आध्यात्मिक शक्तियों से भी संपन्न होता चलता है । शिव के तीन नेत्र है । तीसरा नेत्र जिसे दिव्य चक्षु कहते हैं, आत्म तेज से परिपूर्ण होता है । यह तीसरा नेत्र शांभवी शक्ति के उपासक का खुलता है । जैसे संजय ने अपनी दिव्य दृष्टि से महाभारत का सारा वृत्तांत घर बैठे देखा था और युद्ध का सारा विवरण धृतराष्ट्र को सुनाया था । ऐसी दिव्य दृष्टि तीसरा नेत्र खुलने से होती है । संसार की सभी ज्ञात–अज्ञात बातें उसे विदित हो सकती हैं । दूसरों के मनोगत विकारों को जान लेना सहज हो जाता है, भूतकालीन इतिहास एवं भविष्य की होतव्यता का भी उसे बडुत कुछ पता लग जाता है । पारदर्शी काँच में होकर जैसे भीतर की वस्तुएँ दिखाई पड़ती हैं, वैसे संसार के अनेकों रहस्य उसे अपनी दृष्टि से प्रत्यक्ष दिखाई पड़ने लगते हैं ।

शिवजी ने तीसरा नेत्र खोलकर कामदेव को जला दिया था । इसी ब्रह्म तेज के बल से ऋषियों के शाप से मनुष्य भस्म तक हो जाते थे । सगर राजा के सौ पुत्र इसी प्रकार भस्म हुए थे । यह ब्रह्म तेज एक प्रकार विद्युत प्रवाह है । जिसका शक्तिपात करके किसी को लाभान्वित भी किया जा सकता है । साथ ही तांत्रिक मार्ग से उपयोग करने पर अभिचार, मारण आदि के हानिकारक शाप भी फलितार्थ किए जा सकते हैं, परंतु इस ब्रह्मतेज को सांसारिक प्रयोजनों में खर्च करने की भूल न करनी चाहिए, उसका तो एक मात्र सदुपयोग आत्मकल्याण के लिए ही है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

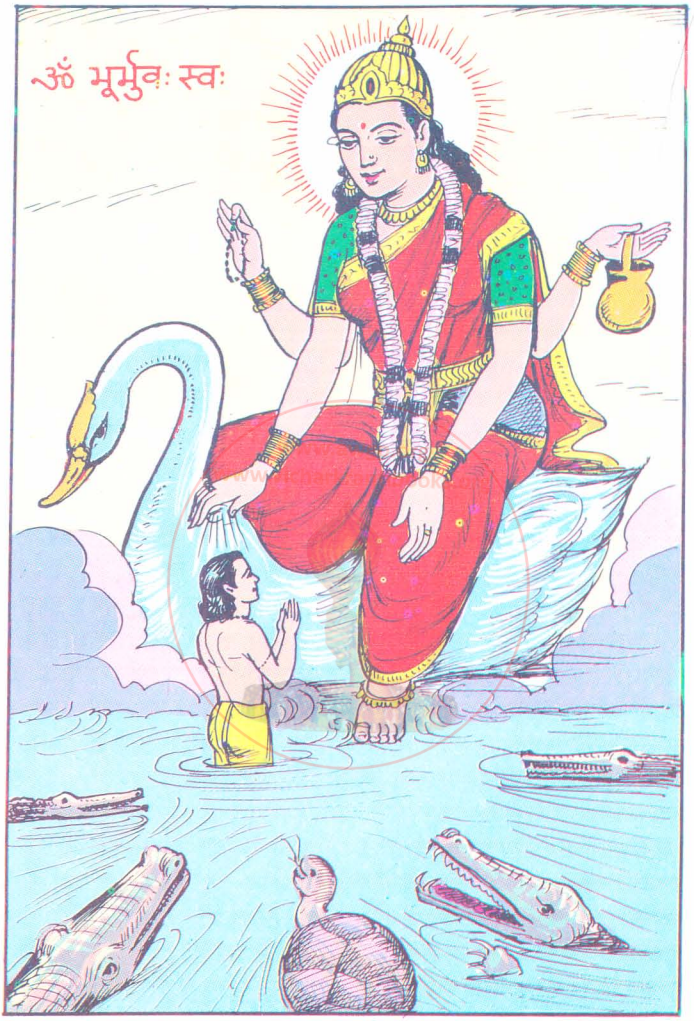

७ उद्धारकर्त्री माता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

७-उद्धारकर्त्री माता

जीवन में कष्ट और कठिनाई की कमी नहीं । मनुष्य के सामने आए दिन संकट आते रहते हैं । इनमें से कई बाधाएँ तो इतनी विकट होती हैं कि उनसे छूटना दुस्तर मालूम देता है । मनुष्य जब अपनी तुच्छ सामर्थ्य और परिस्थिति की भयंकरता की तुलना करता है तो उसकी हिम्मत टूट जाती है । आँखों के सामने निराशापूर्ण अंधकार दिखाई पड़ता है । संसार में अपना सहायक भी नहीं दिखता और उस भयंकर परिस्थिति के टलने की सूरत नहीं दीखती । ऐसी परिस्थिति में यदि कोई व्यक्ति सच्चे हृदय से माता की पुकार करता है तो ग्राह से गज को बचाने के लिए नंगे पैर भागने वाले भगवान की तरह माता सहायता को आती है । द्रौपदी की लाज बचाने के लिए चीर बढ़ाने की शक्ति माता में मौजूद है ।

संसार को भवसागर कहा गया है । उसमें ऐसे मगर–मच्छों की कमी नहीं है जो हमें निगल जाने के लिए हर घड़ी घात लगाए रहते हैं । जब भी मौका मिलता है तभी धर दबोचते हैं और बोटी बोटी नोंच डालते हैं । इन महाग्राहों से बचने का प्रयत्न मनुष्य करते हैं, कई बार अपनी प्राण रक्षा कर भी लेते हैं, पर कभी ऐसे भी अवसर आते हैं जब हाथ पाँव फूल जाते हैं और निराशा एवं किंकर्तव्यविमूढ़ता सामने आ खड़ी होती है । ऐसे अवसरों पर माता की करुणा डूबते को बचा सकती है । उसकी भुजाओं में वह सामर्थ्य है कि भवसागर से अपने भक्त को उबार ले और मगर मच्छों से उसके प्राण बचा ले ।

मनुष्य के पास अपना बल बहुत सीमित है । उससे वह बहुत थोड़े काम कर सकता है और बहुत थोड़ी सफलता पा सकता है, परंतु जब गायत्री महाशक्ति का बल उसे प्राप्त हो जाता है, तो लंका को राम की सहायता से फतह करने वाले वानरों की तरह उसका साहस और बल बहुत बढ़ जाता है एवं दुस्तर कठिनाई स्वल्प प्रयत्न से ही सरल बन जाती है । उसे अनुभव होता है मानो सफलता की देवी ने प्रसन्न होकर स्वयं ही मुझे गोदी में उठा लिया है और आपदाओं से बचा लिया है ।

महान उद्धारकर्त्री माता अपने भक्तों को डूबने नहीं देती, जो उसकी शरण में जाता है वह उसे उबारती है । उनकी शरणागति से बढ़कर और कोई ऐसा मौका नहीं है, जो संसार सागर से सरलतापूर्वक तार सके । जिसने माता की भुजाओं का संबल पकड़ लिया, वह पतन के गर्त में नहीं गिर सकता । वह ऊपर को ही उठेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

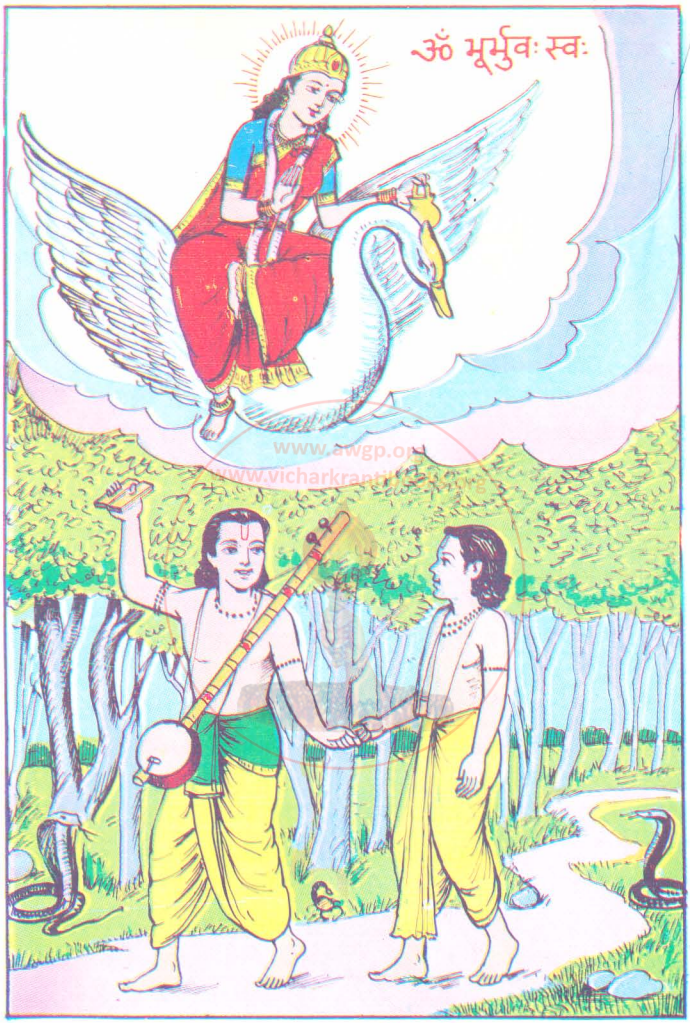

८. सद्गुरू की प्राप्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

८-सद्गुरु की प्राप्ति

जीवन के हर क्षेत्र में शिक्षक की आवश्यकता है । जो कार्य अनजान आदमी मुद्दतों से नहीं कर पाता, वह अनुभवी शिक्षक की सहायता से सरलतापूर्वक पूरा हो जाता है । भौतिक प्रयोजनों में तो चाहे बिना शिक्षक के काम चल जाए पर अध्यात्म मार्ग में, विशेषकर गायत्री उपासना में तो बिना गुरु के थोड़ी प्रगति नहीं हो पाती । पुस्तकों या प्रवचनों से एक सैद्धांतिक जानकारी मिलती है, व्यक्तिगत कार्य प्रणाली को निर्धारित करने के लिए तो व्यक्तिगत पथ–प्रदर्शक की आवश्यकता होती है, जिसे कोई अनुभवी ही कर सकता है ।

सद्गुरु मिल जाना, आधी सफलता मिल जाने के बराबर है, परंतु यह कार्य है बड़ा कठिन, क्योंकि एक तो सुयोग्य पथ–प्रदर्शकों का ही अभाव हो चला है, जो हैं वे पहचान में नहीं आते, क्योंकि असली की अपेक्षा नकली वस्तु अधिक चमकीली और लुभावनी होती है । सच्चे संत सीधे सरल ढंग से रहते हैं, जिससे वे मामूली आदमी प्रतीत होते हैं । उनकी महिमा साधारण दृष्टि से समझ में नहीं आती । नकली लोग जो बहुत आडंबर बनाए होते हैं, वे भोले साधक को ठीक रास्ता बनाने में समर्थ नहीं होते, क्योंकि जो रास्ता स्वयं ही नहीं देखा वह दूसरों को क्या दिखाया जा सकता है ।

गायत्री माता की कृपा जब साधक पर होती है तो बड़ी सरलता से, स्वल्प प्रयास से सद्गुरु की प्राप्ति हो जाती है । बहुत खोज नहीं करनी पड़ती और पथ–प्रदर्शन के लिए उनसे बहुत प्रार्थना एवं खुशामद भी नहीं करनी पड़ती । सहज ही पथ–प्रदर्शन आरंभ हो जाता है और बाधाओं के धने वन में से उँगली पकड़कर वे सरल मार्ग से चरम लक्ष्य तक पहुँचा देती हैं । रास्ते के कुश–कंटक, सर्प, बिच्छू उसे कोई हानि नहीं पहुँचा पाते और दिशा भूल जाने का भय नहीं होता । बालक ध्रुव को नारद जी का सहज पथ प्रदर्शन मिल गया था । उसी प्रकार जिस पर माता की कृपा होती है, उसे भी कोई न कोई सच्चा सहायक एवं पथ प्रदर्शक सद्गुरु अनायास ही प्राप्त हो जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

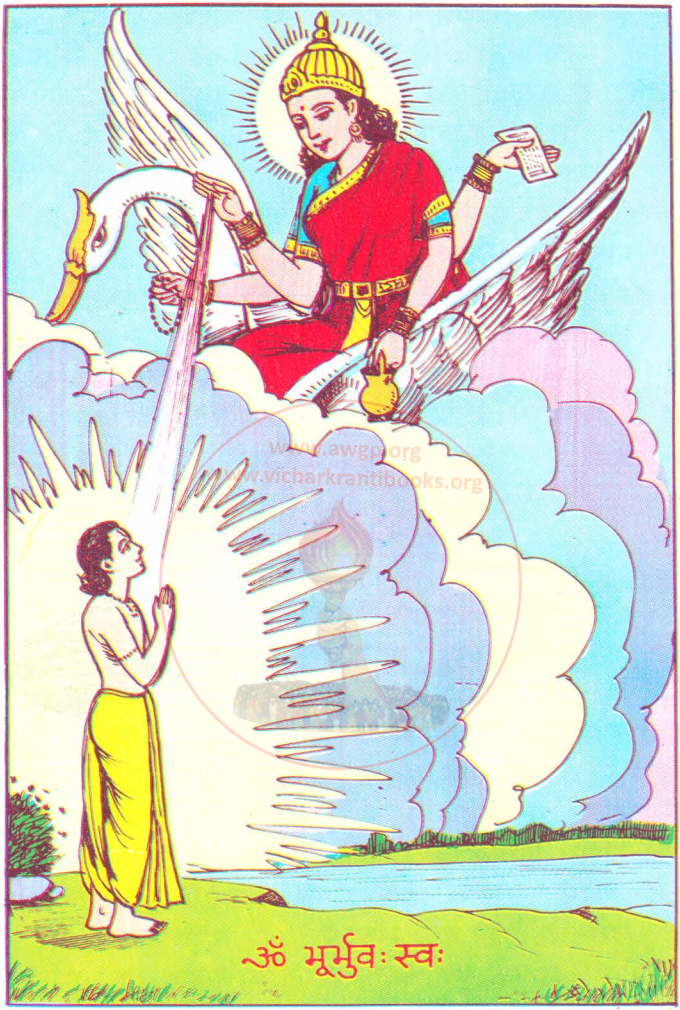

६. अनिष्टों का निवारण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

९-अनिष्टों का निष्कान

जैसे काँटा शरीर के किसी भाग में चुभ जाए या कोई विजातीय विष किसी भाग में प्रवेश कर जाए तो वहाँ तब तक पीड़ा होती रहती है जब तक कि उस हानिकारक तत्व का निष्कासन न हो जाए । मनुष्य के जीवन में नाना प्रकार की व्याधियाँ, यातनाएँ, कठिनाइयाँ एवं पीड़ाएँ हैं, वे किन्हीं कारणों की वजह से हैं । जब तक वे कारण दूर नहीं हो जाते तब तक क्लेशों, चिंताओं और दुःखों से छुटकारा नहीं मिल सकता ।

इन्द्रियों का असंयम, खुदगर्जी, कुटिलता, कटुभाषण, अविश्वास, आलस्य, दुर्व्यसन, कुसंग, दुष्कर्मों में प्रवृत्ति पाप की निंदा से लज्जित होने की निर्लज्जता, ईश्वरीय दंड की उपेक्षा, अनुचित लोभ, मोह, ममता की अति अहंकार की ऐंठ आदि अनेक ऐसी बुराइयाँ हैं जो मनुष्य के मन में घुस बैठती हैं तो मनस्तल को काँटे की तरह नोंचती हैं, उसकी प्रतिक्रिया नाना प्रकार के क्लेश, कलह, दुख–दारिद्र्य, दंड आदि के रूप में सम्मुख आती हैं । जहाँ अग्नि रहती है वहाँ गर्मी अवश्य ही होगी, ऐसा नहीं हो सकता कि अग्नि तो रहे पर उसके कारण उष्णता पैदा न हो । इसी प्रकार जहाँ उपर्युक्त बुराइयाँ होंगी वहाँ नाना प्रकार के दुख अवश्य ही रहेंगे । यह हो नहीं सकता कि इन दोष–दुर्गुणों के रहते कोई व्यक्ति सुखी जीवन व्यतीत कर सके ।

जैसे गन्ने के रस से नाना प्रकार की मिठाइयाँ बनती हैं, जैसे कपास से नाना प्रकार के वस्त्र बनते हैं, वैसे ही इन दोष–दुर्गुणों के परिपाक से नाना प्रकार की कठिनाइयाँ सामने आती हैं । बुरा प्रारब्ध भी बुरे कर्मों से, बुरे संस्कारों से बनता है । यदि किसी को सुख–शांति की अभिलाषा है तो वह तभी पूरी हो सकती है जब अपने विचार, स्वभाव, उद्देश्य और कार्यक्रम को सुधार लें । गायत्री साधना से सतोगुण की वृद्धि होने के कारण यह सुधार अपने आप होता है और अनेक प्रकार के दूषण, अनिष्ट, कौए और चमगादड़ों की तरह मन–मंदिर में से निकल–निकल कर भागते हैं । अंतरात्मा में वैसे ही शांति स्थापित होती है, जैसे काँटा निकल जाने पर तत्क्षण दर्द बंद होता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

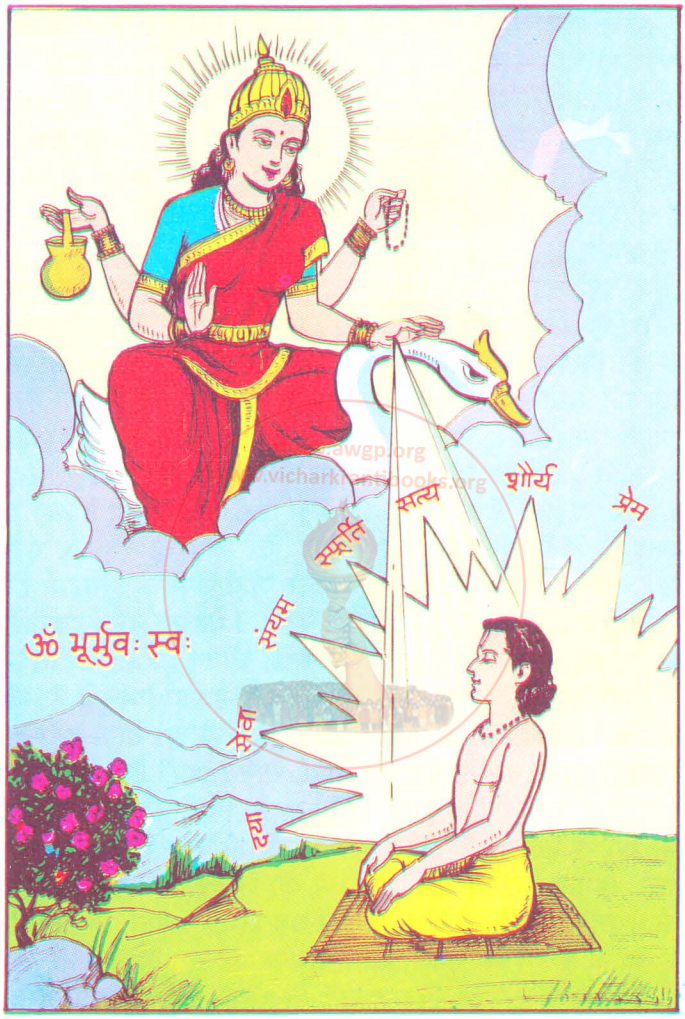

१०. सद्गुणों का वरदान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

१०-सद्गुणों का वरदान

गायत्री माता का मनुष्य शरीर में जब प्रवेश होता है तो वह सद्बुद्धि रूप में होता है । साधक के विचार और स्वभाव में धीरे–धीरे सतोगुण बढ़ता है और उसमें सतोगुणी प्रवृत्तियों का विकास होता है । बुरे स्वभाव के मनुष्यों की बुराइयाँ क्रमशः घटने लगती हैं और जो अच्छाइयाँ उनमें पहले कभी दिखाई नहीं पड़ती थीं अब दृष्टिगोचर होती हैं ।

दया, सेवा, संयम, स्फूर्ति, सत्य, शौर्य, प्रेम यह गुण उनमें दिन दिन बढ़ते हैं । हृदय रूपी उपवन में यह वृक्ष जमते हैं और जब वे फूल–फलों से लदते हैं तो उनके कारण मनुष्य चारों ओर से महकने लगता है । सुंदर मत्त भ्रमरों और कोकिलों के झुंड उसके पीछे फिरते हैं और फल लोभियों की भीड़ उसे घेरे रहती है । यह सात लाभ सप्त तीर्थों में स्नान करने के बराबर हैं । सूर्य के रथ में सात घोड़े जुते रहते हैं । आत्मा के रथ में उपर्युक्त सात सद्गुण ही अश्व हैं, उनके जुत जाने से आत्म–कल्याण का मार्ग बहुत शीघ्र पूरा हो जाता है ।

सद्गुणों से बढ़कर और कोई संपत्ति नहीं । जो व्यक्ति सच्चाई पर आरूढ़ है, अपनी पवित्रता के कारण सदा निर्भय रहता है और किसी बुराई के आगे सिर नहीं झुकाता, जिसके हृदय में दूसरों के लिए सच्चा प्रेम एवं आत्मभाव है, जो दूसरों के दुख देखकर दया से द्रवित हो जाता है, सेवा जिसके जीवन का लक्ष्य है, मन इन्द्रियों पर जिसने संयम प्राप्त किया है तथा परिश्रम के लिए जिसकी नस नाड़ियों में सदा उत्साह रहता है, निराशा आलस्य जिसे छूने तक नहीं पाता, ऐसा व्यक्ति मनुष्य होते हुए भी देवता के समान है ।

लौकिक संपत्तियों से, सांसारिक सुखों से देवी संपत्तियाँ अधिक महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान हैं । संसार के पदार्थों से जितना सुख मिलता है उसकी अपेक्षा इन आत्मिक गुणों से अनेक गुना आनंद उपलब्ध हो सकता है । गीता में यों तो २६ दैवी संपदाएँ गिनाई गई हैं, पर उनमें उपर्युक्त सात ही प्रधान हैं । गायत्री माता अपने भक्तों को यह सात संपत्तियाँ प्रदान करती हैं । फलस्वरूप उसकी अंतःभूमिका देवतुल्य हो जाती है और जो सुख देवता लोग सुरपुरी में प्राप्त करते हैं वह सुख साधक को मनुष्य जीवन में अपने सद्गुणों के कारण प्राप्त होता है । जिसके पास दैवी संपदाएँ हैं निश्चय ही वह संसार की समस्त संपत्तियों का स्वामी होने की अपेक्षा अधिक धनी माना जाएगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

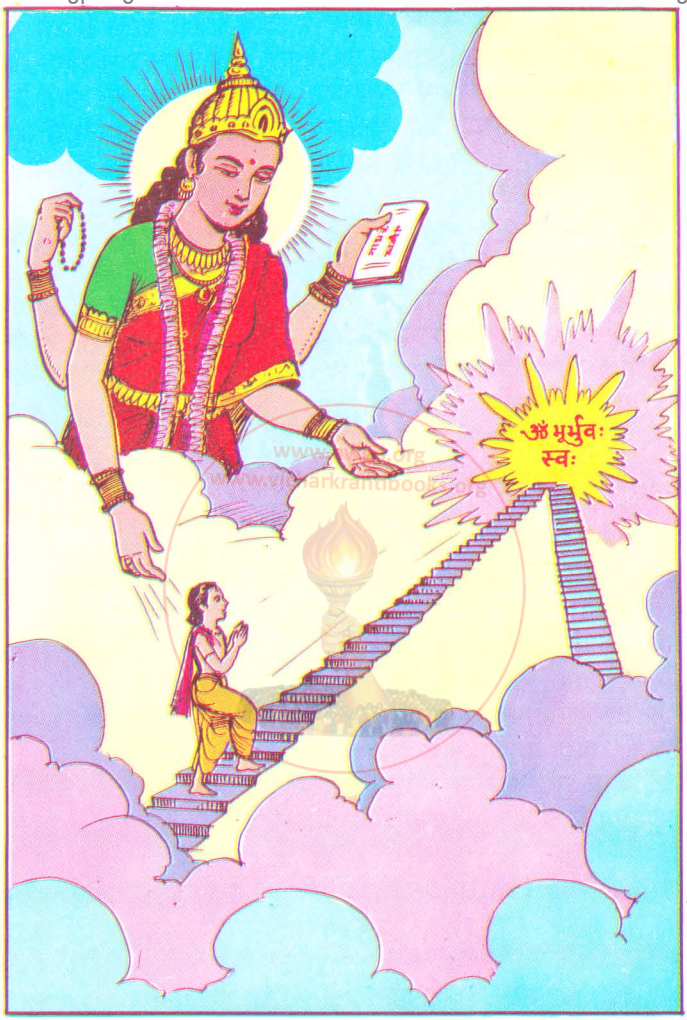

११- उन्नति के पथ पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

११-उन्नति के पथ पर

जीव का स्वाभाविक धर्म ऊपर चढ़ना, उन्नति करना, आगे बढ़ना, विकसित होना है । आत्मिक क्षुधा के कारण ही मनुष्य विभिन्न दिशाओं में अपना विकास करता है । रोटी, कपड़ा, घर और आराम की मोटी व्यवस्थाएँ हो जाने से कोई व्यक्ति मजे में जीवित रह सकता है, पर इतने मात्र में किसी को आत्मसंतोष नहीं हो सकता । जीवन की विभिन्न दिशाओं में उन्नति करने की हर मनुष्य को अभिलाषा होती है और उस आकांक्षा की पूर्ति हुए बिना, आंतरिक शांति उपलब्ध नहीं होती ।

उत्थान की अनेक सीढ़ियाँ हैं, उन पर चढ़ता हुआ जीव आत्मोत्थान तक पहुँचता है । शारीरिक, आर्थिक, बौद्धिक, पारिवारिक दांपत्यिक उन्नति को करता हुआ मनुष्य यश, प्रतिष्ठा, आदर, नेतृत्व एवं सुख सुविधा का अधिकारी बनता है । धार्मिक पारमार्थिक, आध्यात्मिक उन्नति की ओर बढ़ते हुए सतोगुण एवं दिव्य तत्वों की प्राप्ति होती है । भौतिक और आत्मिक दोनों ही दिशाओं में मनुष्य जब बढ़ता है तभी उसकी उन्नति सर्वांगपूर्ण कही जाती है । सांसारिक योग्यताएँ एवं सामर्थ्य भी होनी चाहिए । समर्थ को ही त्याग कहा जाता है । जो अभावग्रस्त एवं दीन–हीन हैं, वह अपने को त्यागी नहीं कह सकता और न उसे त्याग का आनंद मिल सकता है ।

सांसारिक उन्नतियों की भाँति आत्मिक उन्नतियों की अनेक सीढ़ियाँ हैं । इस मार्ग में भी जैसे–जैसे ऊपर को चढ़ते जाते हैं वैसे ही वैसे अनेक दिव्य संपदाएँ उपलब्ध होती हैं । आत्मिक क्षेत्र की संपदाएँ इतनी अनूठी है कि उनकी तुलना में संसार का बड़े से बड़ा सुख एवं वैभव भी तुच्छ बैठता है । उस उन्नति पथ पर मनुष्य बहुधा अपने बलबूते ऊँचा नहीं चढ़ पाता । माता की सहायता से यह उत्कर्ष पथ की यात्रा सरल होती है । माता की कृपा, सहायता एवं प्रेरणा से साधक का उत्साह बढ़ता जाता है और रास्ते की कठिनाइयों से डरने की बजाय उन्हें परास्त करने का साहस पैदा हो जाता है ।

चढ़ाई का मार्ग कठिन होता है । निश्चय ही उसमें काफी श्रम पड़ता है और बड़े साहस तथा धैर्य से काम लेना होता है । इन कठिनाइयों में अनेक साधक फिसल पड़ते हैं, परंतु माता जिसकी पीठ पर है उसे सफलता की दिशा से दिन–दिन अधिक प्रकाश प्राप्त होता चलता है और लक्ष्य की पूर्ति दूर नहीं रह जाती । वह सांसारिक और आत्मिक दोनों दिशाओं में अग्रसर होता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

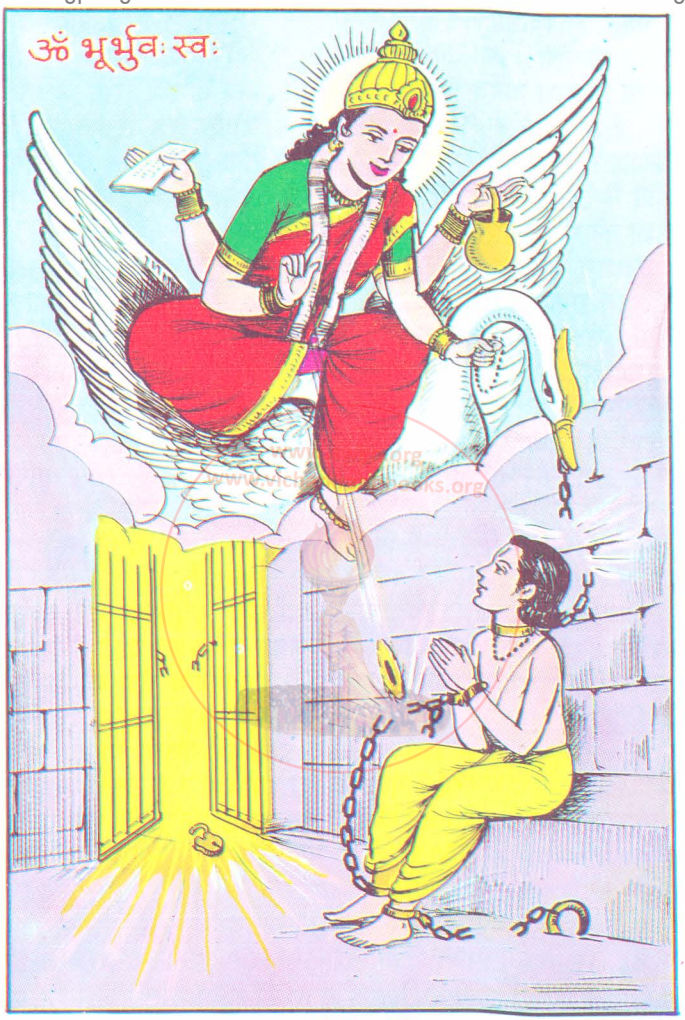

१२. बन्धनों से मुक्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

१२-बंधन से मुक्ति

मनुष्य अनेक बंधनों में बँधा हुआ है, जिस प्रकार जाल में जकड़ा हुआ पक्षी अपनी वर्तमान स्थिति में दुखी होता है और उससे छुटकारा पाना चाहता है, पर सफल मनोरथ नहीं हो पाता, उसी प्रकार मनुष्य भी अपनी परिस्थितियों से दुखी रहता है । अपनी बुरी आदतों के दुष्परिणाम भुगतता है, परंतु उनसे छुटकारा नहीं मिलता । रास्ता खोजता है, पर मार्ग नहीं मिलता । जेलखाने में बंद पड़े हुए कैदी की तरह उसके प्रयास विफल होते रहते हैं और मुक्ति का द्वार बंद दिखाई पड़ता है ।

ये बंधन क्या हैं ? कैसे हैं ? किसके द्वारा बाँधे गए हैं ? इतना समझना भी कठिन है । आत्मज्ञान का जब प्रकाश होता है, तभी उनकी गाँठें दिखाई देती हैं । रामायण उत्तरकांड में ज्ञान दीप वर्णन में गोस्वामी जी ने इन बंधन ग्रंथियों के खोलने का मार्ग बताया है । अपने कुसंस्कार, दूषित दृष्टिकोण, दुर्व्यसन, माया के प्रलोभन, अविद्या का अंधकार, काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह का दुष्प्रभाव, कुकर्म आदि के कारण चित्त की मलीन दशा ही अधम जन्म और बंधन का प्रधान कारण है ।

प्राणी जिन जंजीरों में बँधा हुआ नारकीय बंधन की यातनाएँ सहता है उन जंजीरों की कड़ी धातु की हैं, आसानी से नहीं टूटतीं । योगी, यती, साधु एवं तपस्वी भी फिसल पड़ते हैं और फिर उन्हीं प्रलोभनों के कुचक्र में फँस जाते हैं । इन्द्र और चंद्रमा जैसे देवता, व्यास और विश्वामित्र जैसे ऋषि जिन कुसंस्कारों से फिसल पड़े उनसे साधारण जीवों का मोहित रहना कोई आश्चर्य की बात नहीं ।

माता की कृपा का वरदान जब साधक अपनी तपस्या द्वारा प्राप्त करता है तो उसे दिव्य शक्ति की ऐसी सहायता प्राप्त होती है जिसके कारण अनेकों जंजीर कट जाती हैं । कर्म–बंधन, भोग–बंधन, संस्कार–बंधन, स्वभाव–बंधन, मोह–बंधन आदि जंजीरें, माता की दिव्य शक्ति से कट जाती हैं, तो साधक को जीवन मुक्त दशा का ब्रह्मनंद सहज ही प्राप्त होने लगता है । आजीवन कैद से छूटने वाले कैदी तथा जाल में जकड़े हुए पक्षी को छुटकारा मिलने पर जो सुख होता है उससे अनेकों गुना सुख भवबंधन में असंख्य जन्मों से जकडे हुए प्राणी को 'मुक्ति' पाकर उपलब्ध होता है । इस आनंद को प्राप्त करने का मार्ग गायत्री माता की शरणागति ही है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

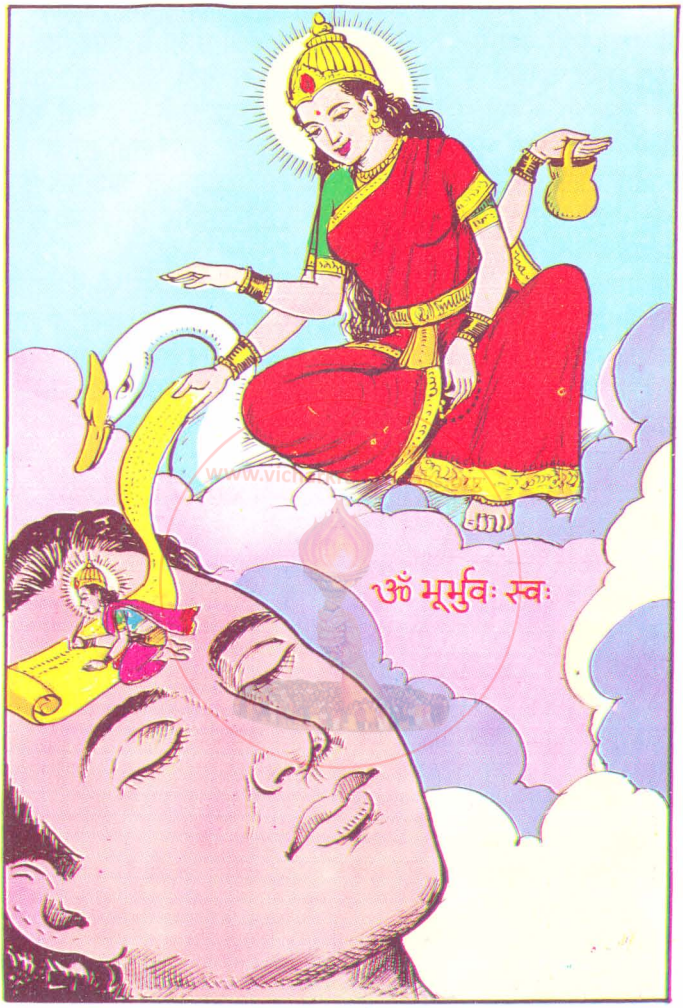

१३ प्रारब्ध परिवर्तन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

१३-प्रारब्ध-परिवर्तन

प्रारब्ध बड़ा प्रबल होता है । ब्रह्मा ने जो विधान जिसके लिए लिख दिया है उसे हटाना या मिटाना किसी के वश की बात नहीं । पांडवों के श्रीकृष्ण जैसे सहायक होते हुए भी उन्हें जीवन भर नाना प्रकार के दुख उठाने पड़े । नल, दमयंती, हरिश्चंद्र, शैव्या, दशरथ, विक्रमादित्य आदि महापुरुषों के सामने जो आपत्तियाँ आईं उनके प्रबल सहायक भी उन्हें न हटा सके । इस कर्म रेखा की अमिटता को देखकर ही सूरदास ने कहा था–

करमगति टारे नाहिं टरै ।
गुरु वशिष्ठ पंडित बड़ ज्ञानी, रचि पचि लगन धरै ।
पिता मरण और हरण सिया को वन–वन विपत परै ।

पूर्व संचित कर्मों के कारण जो भला–बुरा प्रारब्ध बन जाता है, वह भुगतना ही पड़ता है । कोई कितना ही साधु, सत्पुरुष, सज्जन शुभ कर्म करने वाला क्यों न हो उसके पूर्वकृत कर्म प्रारब्ध रूप से जब सामने उपस्थित होंगे उसका परिणाम भुगतना ही होगा । वर्तमान पुण्य, तप या शुभ कर्मों का प्रतिफल तो आगे चलकर, उनका परिपाक होने पर ही मिलेगा ।

हतना होने पर भी माता की कृपा से कठिन प्रारब्धों में संशोधन हो जाता है । अत्यंत दुस्तर और असह्य कष्टों की यातना हल्की होकर बड़ी सरल रीति से भुगत जाती है । कई बार घनघोर घटाएँ आकाश में उठती हैं, उनमें बड़ी मात्रा में जल भरा होता है । वे बरसें तो मूसलाधार वर्षा करती है, पर यदि किसी प्रकार तीव्र वायु उसी समय चलने लगे तो वह जमी हुई घटा हट जाती है और थोड़ी बूँदा–बाँदी होकर बादल चले जाते हैं । मनुष्य के भाग्याकाश मैं इसी प्रकार कई बार बड़े दुस्तर प्रारब्ध होते हैं, पर वे माता की कृपा से चिह्न–पूजा जैसा परिणाम दिखाकर इस प्रकार उतर जाते हैं कि पहले जितना भय दिखाई पड़ता था, वस्तुतः उसका एक अंश ही सामने आता है ।

पूर्ण रूप से प्रारब्ध परिवर्तन तो असंभव है पर माता की कृपा से इसमें अनेक संशोधन और परिवर्तन हो सकते हैं । भविष्य के लिए उत्तम भाग्य हो सकता है । चित्र में गायत्री माता साधक के भाग्य पटल में आवश्यक हेर–फेर कर रही है, उसके पूर्व निर्मित प्रारब्ध में कुछ परिवर्तन किया जा रहा है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

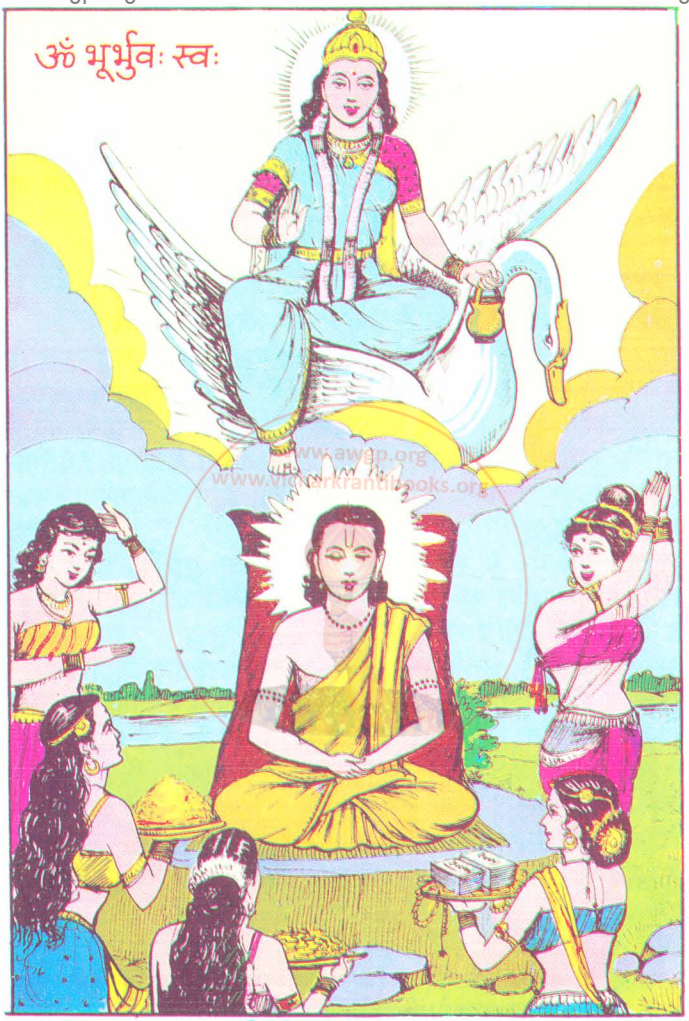

१४. ऋद्धि सिद्धियों के प्रलोभन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

१४-ऋद्धि-सिद्धियों के प्रलोभन

आत्मा, परमात्मा का अंश है । मनुष्य ईश्वर का पुत्र है, उसमें वह सब शक्तियाँ और संभावनाएँ मौजूद हैं, जो परमेश्वर में होती है । जब साधक गायत्री उपासना द्वारा अपने आंतरिक मल विक्षेपों को शुद्ध कर लेता है तो उनकी अंतःभूमि में दैवी शक्तियों का स्वयमेव प्रादुर्भाव होता है और अनेक अलौकिक सामर्थ्य उसमें प्रकट होती हैं जो साधारण मनुष्यों में नहीं देखी जातीं ।

इन अलौकिक सामर्थ्यों को पाकर कई अदूरदर्शी साधक, सांसारिक प्रयोजनों में उनका प्रयोग करने लगते हैं । यश, प्रतिष्ठा, पूजा, महिमा पाने के लिए उन दिव्य शक्तियों का वे ऐसा प्रदर्शन करते हैं, जिसमें उन्हें चमत्कारी सिद्ध पुरुष समझा जाता है और सांसारिक कामना वाले मनुष्यों की भीड़ उन्हे घेरे रहती है । उनकी पूजा, प्रतिष्ठा पा कर वे सिद्ध पुरुष अपने तपोबल से दूसरों के प्रारब्ध बदल देते हैं । कुछ तांत्रिक वाममार्गी साधनाओं द्वारा अभिचार, घात, सम्मोहन, पिशाच सिद्ध, यक्षिणी साधना करते तथा अपने चमत्कार प्रकट करते हैं ।

यह आत्मिक शक्तियों का दुरुपयोग है । आसुरी शक्तियाँ आरंभ में इन सिद्धियों का प्रलोभन देकर नीचे गिराती है ताकि वह असुरता को छोड़कर देवत्व पक्ष में न जावे । नाना प्रकार के प्रलोभन दिखाकर वे साधक को ललचाती हैं और उसे भोग, ऐश्वर्य, यश तथा सांसारिक उलझनों में अपनी शक्तियों को खर्च करने के लिए आकर्षित करती हैं । यदि साधक उस प्रलोभन में फँस जाता है तो उसकी अत्यंत श्रमपूर्वक उपार्जित की हुई आध्यात्मिक कमाई थोड़े ही दिन में समाप्त हो जाती है और वह छूँछ रह जाता है ।

इस खतरे से साधक को गायत्री माता बचाती है । वह उसकी बुद्धि में ऐसी दृढ़ता देती है कि इन ऋद्धि–सिद्धियों के प्रलोभन, आकर्षण और सौंदर्य को उपेक्षा की दृष्टि से देखता है और उनकी ओर से आँख बंद करके अपने लक्ष्य में तन्मय रहता है । तब वे आत्मिक शक्तियाँ उसके लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में सहायक होकर उसे बहुत शीघ्र पूर्णता तक पहुँचा देती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१५. काया कष्टों से निवृत्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

१५-काया कष्टों से निवृत्ति

बीमारी और कमजोरी के कारण ही मनुष्यों को नाना प्रकार के काया कष्ट भुगतने पड़ते हैं । अस्वस्थता का मूल कारण आहार–विहार का असंयम है । अनियमित दिनचर्या, अनुपयुक्त खाद्य–पदार्थ, आलस्य, अति परिश्रम, इंद्रियों का असंयम, चिंता, अस्वस्थता तथा मनोविकारों के कारण बीमारियाँ पैदा होती हैं । पैतृक, जन्मजात तथा प्रारब्ध रोगों को छोड़कर शेष बीमारियों से मनुष्य यदि चाहे तो बचा रह सकता है । अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक और कर्त्तव्यनिष्ठ रहकर दीर्घजीवन तथा आरोग्य आसानी से प्राप्त किया जा सकता है । जब गरीब लोग अभावग्रस्त परिस्थितियों में रहकर भी हट्टे–कट्टे रह सकते हैं, तो कोई कारण नहीं कि सुविधाजनक स्थिति वाले निरोगी न रह सकें ।

प्रकृति के नियमों को तोड़कर अप्राकृतिक जीवन क्रम अपनाने से शरीर की जीवनी शक्ति घटती जाती है । कमजोरी, थकान, दुर्बलता और उदासी घेरे रहती है । थोड़ा सा भी दबाव पड़ने पर शरीर बिखर जाता है और किसी न किसी बीमारी से ग्रसित होकर चारपाई को पकड़ लेता है । बीमारी में अपने काया–कष्ट के अतिरिक्त अर्थ–हीन चिंता, घर वालों को परेशानी तथा अशोभनीय परिस्थितियों की उत्पत्ति होती है । दूसरों को भी रोग की छूत लगने का अंदेशा रहता है । कमजोर आदमी भी एक प्रकार का बीमार ही है । रोग शैय्या पर भले ही वह न पड़े पर कोई उत्पादन, उत्साहवर्धक पुरुषार्थ उन्नति या कमाई का आयोजन उनके द्वारा नहीं हो सकता ।

इस विपन्न दशा से मनुष्य सहज ही बच सकता है, यदि यह प्राकृतिक एवं असंयम आहार–विहार से बचा रहे । यह बचाव तभी संभव है जब विचार, स्वभाव एवं कार्यक्रम में सतोगुण की समुचित मात्रा हो । गायत्री उपासना के फलस्वरूप साधक में असंयम के लिए स्थान नहीं रहता, अतएव बीमारी और कमजोरी से भी उसे छुटकारा मिल जाता है । जो बीमारियाँ बहुत दिनों से शरीर में प्रवेश किए हुए थीं, बहुत दवा–दारू कराने पर भी ठीक नहीं हो रही थीं, वे गायत्री उपासना से अपने आप ठीक होती देखी हैं । असाध्य रोगी मृत्यु के मुँह में से वापस लौटते देखे गए हैं । साधना द्वारा शरीर में सतोगुण की वृद्धि करना एक ऐसी रामबाण औषधि है जिसके समान सारे चिकित्सा शास्त्र में अन्य कोई वस्तु नहीं मिल सकती ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

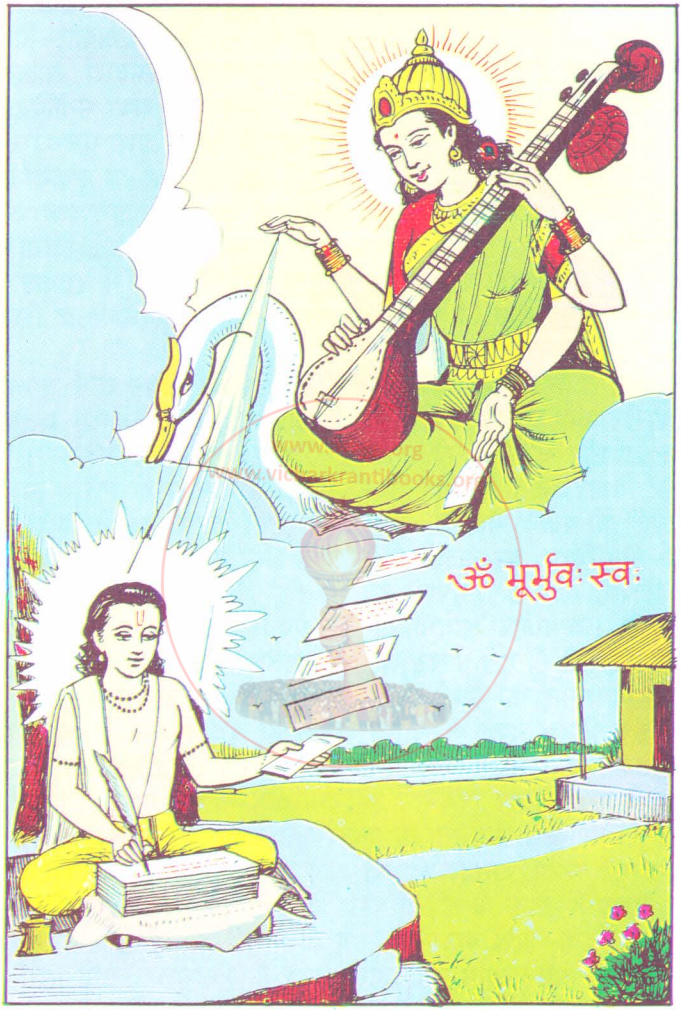

१६. सद्बुद्धिदायिनी सरस्वती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

१६· सद्बुद्धिदायिनी सरस्वती

आद्यशक्ति महामहिमामयी गायत्री के तीन रूप हैं–ह्रीं, श्रीं, क्लीं । ह्रीं कहते हैं–सरस्वती को, श्रीं कहते हैं–लक्ष्मी को, क्लीं कहते हैं–काली को । सबसे प्रथम और सबसे प्रधान ह्रीं है । सरस्वती के रूप में साधक के मन में सद्बुद्धि रूपी वीणापाणि भगवती का प्रवेश होता है । हंस जैसा नीर–क्षीर विवेक करने वाली दूरदर्शिता, अंतःकरण को सदाशयता से झंकृत कर देने वाली झंकार, यह दो उपहार साधक को प्रारंभिक प्रसाद की तरह प्राप्त होते हैं ।

बुद्धि का शुद्ध होना और सद्बुद्धि प्राप्त होना यह दोनों उपहार माता अपने भक्त को देती हैं । बुद्धि में जो मलीनता, चंचलता, अस्वस्थता भरी रहती है उसके कारण मस्तिष्क निर्बल होता है और स्मरण शक्ति की कमी, तीक्ष्ण चेतना का अभाव, मोटी अक्ल देर से समझ आना, अधिक समय तक कोई बात याद न रहना, बौद्धिक बात करने में मस्तिष्क थक जाना आदि विकार उत्पन्न हो जाते हैं, जिनके कारण कई कार्य ऐसे हैं जिनमें सफलता का मार्ग रुक जाता है । इन दोषों के कारण विद्यार्थी फिसड्डी रहते हैं, परीक्षा में फेल हो जाते हैं । वकील, डाक्टर, वक्ता, लेखक, मुनीम, कारीगर अपने अपने कामों में अनेकों भूल करते हैं, जिससे उनकी कीर्ति और आजीविका दोनों में ही कमी आ जाती है अथवा विकास रुक जाता है ।

गायत्री बुद्धि का मंत्र है । उसमें 'ह्रीं' तत्व की उपासना प्रधान है । इस महामंत्र से बुद्धि की मलीनता दूर होती है और मस्तिष्क से काम करने वाले लोगों की सफलता का मार्ग खुल जाता है । गायत्री उपासना करने वाले विद्यार्थी अच्छे नंबरों से उत्तीर्ण होते हैं तथा अन्य बुद्धिजीवी लोगों की मनोदशा में सफलता आ जाने के कारण उनका कार्य उन्नति करता हुआ देखा गया है । मस्तिष्क में बल आने से अनेकों मानसिक रोगों को अपने आप अच्छा होते देखा गया है । सिर–दर्द, आधा–शीशी, पागलपन, भूतोन्माद, विक्षिप्तता, सनक, दुःस्वप्न, डर लगना, मृगी, मूर्छा आदि में गायत्री उपासना से आशाजनक लाभ होता है ।

सद्बुद्धि का संबंध सद्गुणों से है । व्यवस्थित कार्यक्रम सुलझे हुए विचार, स्थिर मति, दूरदर्शिता, प्रतिष्ठा, व्यवहार, शांत चित्त, संतुलित विवेक, सूक्ष्म समझ यह सब बातें सद्बुद्धि के कारण प्राप्त होती हैं । सद्बुद्धि और शुद्ध बुद्धि के प्रतीक सद्ग्रंथों की चित्त में वर्षा होती हुई दिखाई देती है । गायत्री उपासना के फलस्वरूप माता का यह उपहार उसके प्रिय बालकों को अवश्य प्राप्त होता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१६. ऐश्वर्यवर्द्धिनी लक्ष्मी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

१७-ऐश्वर्यवर्द्धिनी लक्ष्मी

संसार में जीवन–यापन करने के लिए कुछ वस्तुओं की आवश्यकता होती है । जिन वस्तुओं के बिना हमारा काम नहीं चलता या जिनके न होने से जीवन रक्षा में बाधा पहुँचती है उन्हें संपत्ति या लक्ष्मी कहते हैं । अन्न, वस्त्र, मकान, पुस्तक, दवा आदि की आवश्यकताएँ ऐसी हैं जिनके न होने पर जीवन धारण करने में कठिनाई होती है । इन्हीं सब आवश्यक वस्तुओं को रुपए के रूप में सुरक्षित रख लिया जाता है । रुपए के बदले में यह वस्तुएँ चाहे जब प्राप्त कर ली जाती हैं । यही धन संचय का उद्देश्य है ।

परिश्रम, मानसिक योग्यता, साधन, पूँजी सहयोग और परिस्थिति पर धन का उपार्जन अवलंबित है, इसमें से कुछ बातें तो मनुष्य अपने–अपने प्रयत्न और पुरुषार्थ से जमा कर सकते हैं पर कुछ ऐसी हैं जो मनुष्य के हाथ में नहीं होतीं । प्रयत्न करने मात्र से उन्हें उपलब्ध नहीं किया जा सकता । कई ऐसे अवसर आते हैं कि बिना प्रयत्न या स्वल्प प्रयत्न से बहुत लाभ होता है और कई बार अत्यंत बुद्धिमत्ता और परिश्रम के साथ दैवी विधान भी छिपा रहता है । धनी को निर्धन और निर्धन को धनी होने की घटनाएँ आए दिन घटित होती रहती हैं । इनमें भी कोई रहस्यमय तथ्य छिपा होता है ।

गायत्री की 'श्रीं' शक्ति लक्ष्मी है । लक्ष्मी के द्वारा ऐश्वर्य, वैभव, संपत्ति और धन प्राप्त होता है । यह धन ईश्वर की अमानत है जिसका उपयोग अपने भोग, अहंकार या संचय में नहीं वरन् मनुष्यता के विकास के लिए है । यदि मनुष्य उसे स्वार्थ के ही लिए दवा बैठता है तो उससे वह संपत्ति छीन ली जाती है । गायत्री के उपासक में यह बुद्धि होती है कि धन का उपयोग किस कार्य में करूँ और वह मुझे क्यों दिया गया है ? यह बुद्धि होने के कारण वह सदुपयोग करके थोड़े धन से भी ऐसा लाभ उठा लेता है, जो बड़े–बड़े करोड़पतियों को भी प्राप्त नहीं होता ।

अमीर वह नहीं है जिसके पास मिल, मोटर, जायदाद तथा तिजूरी भरे नोट हैं, वरन् वह है जो ईमानदारी से कमाता है और उसी से संतुष्ट रहता है । गायत्री उपासकों को कभी पैसे की कमी नहीं पड़ती, उनकी उचित आवश्यकताएँ रुकी नहीं रहतीं, उन्हें अपने थोड़े धन में भी कुबेर के समान संतोष होता है । कई बार गायत्री उपासना से विपुल मात्रा में धन वृद्धि होती देखी गई है, पर साथ ही सदुपयोग बुद्धि भी अवश्य बढ़ती है जिससे उसका धन भी धन्य बन जाता है । गायत्री उपासक भूखा नंगा कहीं भी नहीं देखा गया है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

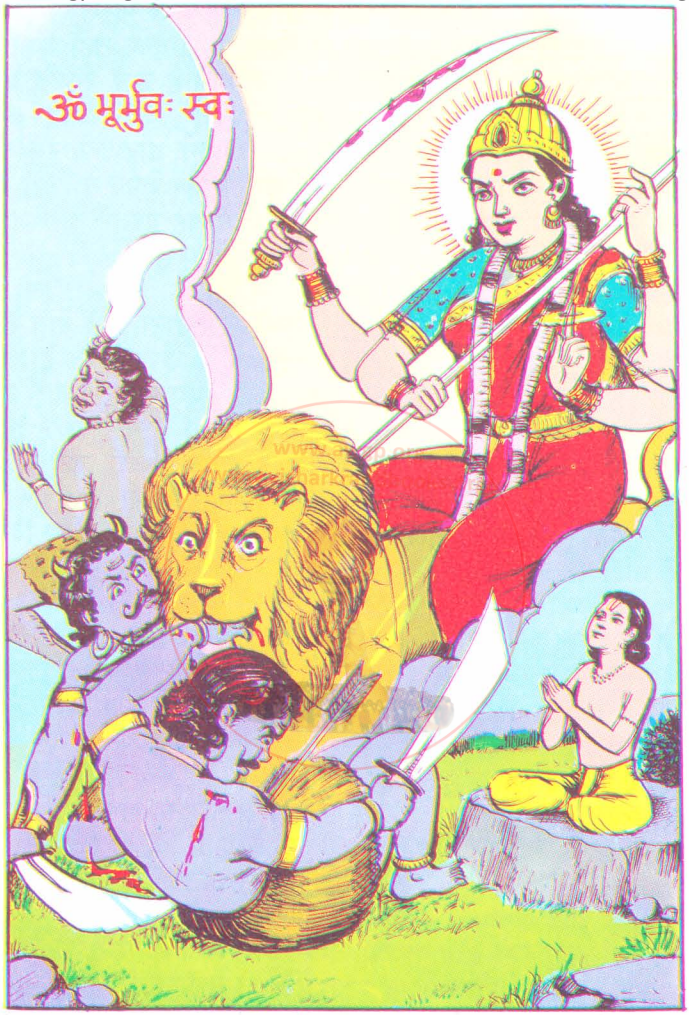

१८ महाशत्रुओं से संरक्षण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

१८-महाशत्रुओं से संरक्षण

शत्रुओं की कमी नहीं । हमारे भीतर और बाहर अगणित शत्रुओं की सेना फैली हुई है, जो इस घात में रहती है, कब अवसर पावें और कब आक्रमण करें । सजग रहते हुए भी कई बार ऐसे अवसर आते हैं, जब थोड़ी सी भूल हो जाए और उस मौके को ताक शत्रुओं की सेना अपना आक्रमण कर दे ।

मनोविकार हमारे सबसे बड़े शत्रु हैं । थोड़ा सा प्रलोभन, आकर्षण, अवसर सहयोग पाकर वे प्रबल हो उठते हैं और ऐसे कृत्य करा डालते हैं जिन पर पीछे बड़ा पश्चात्ताप होता है, हानि उठानी पड़ती है । रोग, शोक, मृत्यु, अकाल, आपत्ति, हानि, विरोध, दारिद्र्य, संघर्ष आदि के ऐसे आकस्मिक अज्ञात संकट सामने आ जाते हैं, जिन्हें प्रारब्ध शत्रु कह सकते हैं । इनके अतिरिक्त कुछ मनुष्य भी शत्रु हैं, जिनसे किसी कारणवश द्वेष या मनोमालिन्य हो जाता है, वे शत्रुता और प्रतिहिंसा की भावना से प्रेरित होकर सदा हानि पहुँचाने का ही प्रयत्न करते रहते हैं ।

शत्रुओं से अनेक हानियाँ हैं, वे हमारी शक्तियों को आत्मरक्षा की चिंता में अटकाए रहते हैं । उन्नति के लिए जिस समय, शक्ति और पुरुषार्थ को लगाया जाना चाहिए था वह शत्रुओं की रोकथाम में ही लगता है । इसके अतिरिक्त कभी–कभी उनका ऐसा आक्रमण भी हो जाता है जिसकी चोट अपने को तिलमिला देती है और उसका आघात बहुत समय तक दर्द करता रहता है । शत्रुओं से रहित व्यक्ति वस्तुतः बड़ा सौभाग्यशाली है । ऐसे भाग्यवान् को 'अजात शत्रु' कहते हैं ।

गायत्री का 'क्लीं' रूप संहारक है । उसे दुर्गा, काली, चंडी आदि नामों से भी संबोधित किया जाता है । भक्त की रक्षा के लिए माता अपना यही रौद्र रूप ग्रहण करती है और सिंह के समान विपुल पराक्रम के साथ त्रिशूल लेकर उन शत्रुओं का संहार करती है, जो भक्त को अनुचित रूप से त्रास देते हैं । दुष्टों की शक्ति चाहे जितनी बढ़ी–चढ़ी हो, उनकी भयंकरता चाहे कितनी ही विकराल लगती हो पर माता की शक्ति का प्रतिरोध उनसे नहीं हो सकता । रावण, कंस, हिरण्यकशिपु, भस्मासुर, दुर्योधन आदि दुष्टों की जो शक्ति नष्ट कर सकती है, उसके लिए कोई दुष्ट ऐसा नहीं जो परास्त न हो । द्वेष के स्थान पर प्रेम, कलह के स्थान पर शांति, संघर्ष के स्थान पर सहयोग उत्पन्न कर देना माता के एक कृपा कण से ही संभव हो जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

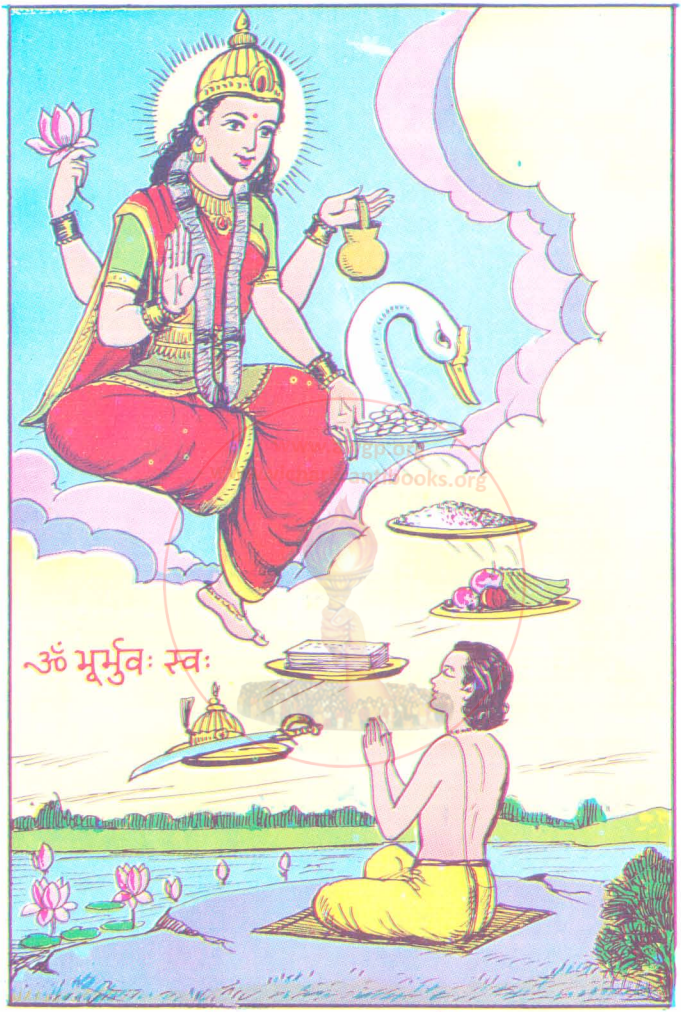

१६ अदृश्य सहायताऐं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

१९-अदृष्य सहायता

मनुष्य जितनी उन्नति करता है या सुख सौभाग्य प्राप्त करता है वह केवल अपने शरीर से नहीं कर लेता, उसे बाहरी सहयोग और सहायता की भी आवश्यकता पड़ती है । जिसे जितनी बाह्य सहायता उपलब्ध होती है वह उतनी ही जल्दी ऊपर उठता जाता है । अकेले आदमी की शक्ति बड़ी सीमित होती है, जब उसे अनेकों की अनेक प्रकार से सहायताएँ उपलब्ध होती हैं तभी वह सफलता की मंजिल पार कर पाता है ।

कुछ सहायताएँ प्रत्यक्ष होती हैं कुछ अप्रत्यक्ष । प्रत्यक्ष सहायताओं की जानकारी रहती है, उस सहायता करने वाले के उपकार का मूल्य और वजन सब जानते हैं क्योंकि आँखों से उसे प्रत्यक्ष देखा गया है । अप्रत्यक्ष सहायताएँ ऐसी होती हैं जो आँखों से स्पष्ट दिखाई नहीं पड़तीं, वे सीधी आकाश से आंगन में भी नहीं गिरतीं वरन् किसी मध्यस्थ द्वारा या किसी बहाने प्राप्त होती हैं । हम इनके मूल्य और वजन को भले ही न समझें पर उनका महत्व असाधारण है । दैवी सहायता मिलना जब बंद हो जाता है तब बहुधा ऐसा कहा जाता है कि अब हमारा भाग्य सहायता नहीं देता और प्रबल पुरुषार्थ भी निरर्थक जा रहा है ।

जब दैवी सहायता प्राप्त होती है तब ऐसे विचित्र सुअवसर प्राप्त होते हैं कि अपने प्रयत्न का सुअवसर से विशेष संबंध नहीं दीखता । जहाँ उसी परिस्थिति के, उसी योग्यता के, उसी स्थान के अनेक व्यक्ति जहाँ के तहाँ हीन अवस्था में पड़े रह जाते हैं वहाँ एक मनुष्य विशेष रूप से ऐसी सफलता का अवसर, लाभ या सौभाग्य प्राप्त करता है जिसके लिए अनेकों तरसते हैं, तो वह लाभ दैवी सहायता के कारण ही समझा जाना चाहिए । तब दैव की अनुकूलता से मिट्टी, धूल से सोना होने की उक्ति चरितार्थ होती है ।

प्रारब्ध, भाग्य, विधि का विधान, ईश्वर इच्छा तथा दैवी सहायता, हमारे बुरे भले कर्मों से संबंधित है । गायत्री तप की गर्मी से पुराने कच्चे सुकृत शीघ्र पक जाते हैं और जो लाभ बहुत काल पश्चात् मिलना चाहिए था वह शीघ्र मिल जाता है । तप की अग्नि में अनेक पाप और दुर्भाग्य जल भी जाते हैं । देखा है कि अग्रसर होने वाले साधकों को अनेक बार ऐसी आकस्मिक सहायताएँ मिलती हैं, मानो माता ने ही आंतरिक लोक से वह सब साधन सुविधाएँ भेजी हों ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

२०. सन्तुष्ट दाम्पत्य जीवन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

२०-संतुष्ट दांपत्य जीवन

सांसारिक जीवन में शरीर रक्षा के लिए अन्न, वस्त्र आदि आवश्यकताओं के उपरांत सब से बड़ी आवश्यकता 'संतुष्ट दांपत्य जीवन' की है । जिसे इस क्षेत्र में अभाव, बुद्धि, विकृति एवं असंतोष होगा वह अन्य सब प्रकार के भौतिक सुख साधनों से संपन्न होते हुए भी संतुष्ट न रह सकेगा ।

संत, महात्मा, त्यागी, योगी एवं ब्रह्मचारी लोग बहुधा नारी से दूर रहने और उससे घृणा करने के सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं । यह प्रतिपादन निम्नकोटि की मादक उत्तेजक विषय वासना के विरुद्ध है । इसके अतिरिक्त अन्य सभी रूपों में नारी परंपरा आदरणीय, श्रद्धास्पद, पूजनीय है । उनमें स्वभावतः पुरुष की अपेक्षा देव–तत्व अधिक होता है । माता, बहिन, बेटी और धर्मपत्नी के रूप में उनकी महिमा का जितना गान भारतीय ऋषियों ने किया है उतना सम्मान और किसी ने नहीं किया । नारी अर्धांगिनी है, उसके बिना पुरुष अधूरा है । हमारे सभी देवता सपत्नीक थे और अधिकांश ऋषि मुनि अपनी धर्मपत्नियों सहित तपस्या करते थे । नारी की उपयोगिता सेवा, सहायता की आवश्कता पुरुष को है और पुरुष की नारी को । गृहस्थ भी माता की कृपा एवं सफलता का उतना ही अधिकारी है, जितना विरक्त ।

गायत्री माता की छत्रछाया प्राप्त करने वाले साधकों का दांपत्य जीवन अतीव सुमधुर होता है । कुमारियाँ यदि उपासना करें तो उत्तम वर तथा अनुकूल कन्या मिलती है कुमारों को सेवा भावी मनोवांछित पत्नी प्राप्ति होती है । विवाहित पति–पत्नी में यदि पारस्परिक मनोमालिन्य, रुचि प्रतिकूलता तथा कलह के कारण विद्यमान हों तो उनका समाधान होता है । दांपत्य जीवन में कलह उत्पन्न करने वाले अनेक कारण होते हैं, शरीर मन स्वभाव, कार्य एवं विचारों में कुछ ऐसी प्रतिकूलता रहती है जिसके कारण दोनों में एकता, सरसता एवं स्नेहशीलता उत्पन्न नहीं हो पाती है । इन्हीं असंतुष्ट जीवनों में माता की कृपा की वर्षा होने से परिवर्तन होते हैं जिनसे प्रतिकूलताएँ अनुकूलता बन जाती हैं और सद्बुद्धि बढ़ने के कारण कलह के बीज अपने आप नष्ट हो जाते हैं ।

गायत्री माता का आशीर्वाद साधक को सुखी और सरस दांपत्य जीवन के रूप में प्राप्त होता है । दोनों एक ही तरफ आत्मीयता के बंधन में बँधकर जीवन को धार्मिक आधार पर व्यतीत करते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

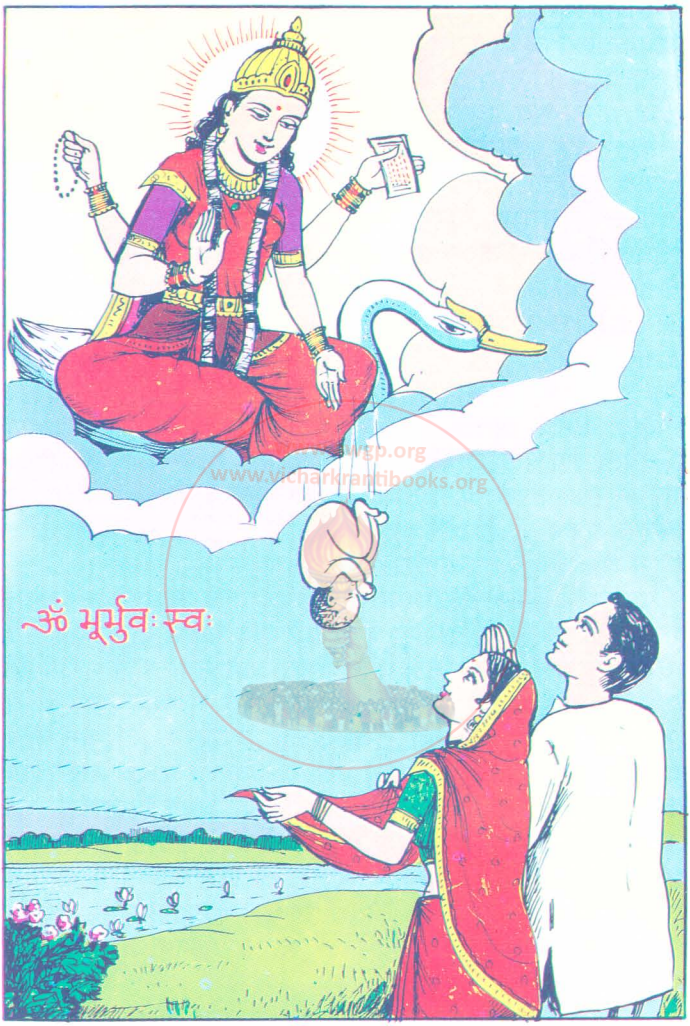

२१ सुसन्तति का सौभाग्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

२१-सुसंतति का सौभाग्य

घर की शोभा, आँगन का सौंदर्य, बालकों पर निर्भर रहता है । जिसके घर में हँसते–खेलते बालक हैं उस घर में उत्साह और प्रसन्नता हर घड़ी नाचती रहती है । घर वालों का समय कट जाता है और बुरी परिस्थितियाँ भी बालकों के बीच हँसते–खेलते व्यतीत हो जाती हैं । बच्चों की चिंता में मनुष्य उत्साहपूर्वक अधिक काम करने के लिए प्रेरित होता है । फिजूलखर्ची, हरामखोरी, आवारागर्दी आदि अनेक बुराइयों से बच जाता है । बाल बच्चेदार स्त्री–पुरुषों के चारित्रिक पतन होने की बहुत कम संभावना रहती है ।

यद्यपि आज के युग में अत्यधिक बढ़ी हुई जनसंख्या को देखते हुए जितने बालक कम हों उतना ही अच्छा है । जिसके संतान न हो, उसे भी माता की विशेष कृपा मानकर अपना शिशुपालन वाला समय लोक सेवा और आत्म साधना में लगाना चाहिए । पर यदि संतान हो भी तो वह ऐसी होनी चाहिए जो कुल को उज्ज्वल करने वाली और माता–पिता के यश को बढ़ाने वाली हो ।

वासना से प्रेरित होकर किया हुआ गर्भाधान वैसा ही फल उत्पन्न करता है जैसा कि पति–पत्नी का उद्देश्य होता है ऐसे बालक स्वार्थ और वासना की निकृष्ट भावनाओं से भरे होते हैं, वे छोटेपन से ही अवज्ञाकारी और दुर्गुणी होते हैं और बड़े होने पर माता को अपमान, शोषण, कष्ट एवं अपयश ही देते हैं । ऐसी सन्तान पर माता–पिता ने जो त्याग किया था उसका स्मरण करके उन्हें अपने श्रम की निस्सारता, निरर्थकता और असफलता पर भारी खेद होता है । तब वे कहते है कि कुपात्र संतान होने से संतान रहित रहना हजार गुना अच्छा है ।

ऐसी विषम स्थिति में गायत्री उपासक को नहीं पड़ना पड़ता । उनके विचार उच्चकोटि के होने से संतान भी वैसी मनोभूमि लेकर आती है । द्रौपदी और अर्जुन की शिक्षाएँ गर्भ में ही सीखकर जैसे अभिमन्यु पैदा हुआ था, वैसे ही गायत्री साधक, सतोगुणी माता–पिता के संस्कार लेकर जो बालक जन्म लेते हैं, वह बड़े होने पर ऐसे बनते हैं जिनके गुण, कर्म, स्वभाव, पराक्रम एवं प्रतिष्ठा को देखकर माता–पिता को संतोष होता है और वे अपने श्रम को सफल हुआ समझते हैं । ऐसी संतान ही अपने माता–पिता को संतोष देती है और उनके यश को बढ़ाती और सेवा करती है । बिगड़ी हुई संतान का सुधार, उसकी बुद्धि में हेर–फेर, शुभ संस्कारों की स्थापना आदि कार्यों के लिए गायत्री उपासना बड़ी उपयोगी सिद्ध होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

२२. पारिवारिक सुख-शान्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

२२-पारिवारिक सुख-शांति

जब परिवार के सब लोग प्रेमपूर्वक, एक दूसरे की हमदर्दी, सेवा और सहायता करते रहते हैं, एक दूसरे का उचित आदर करते हुए त्याग और उदारता का व्यवहार करते हैं तो घर में स्वर्गीय शांति बिराजती है । सबके सहयोग से घर की आर्थिक स्थिति सुधरती है, उत्पादन बढ़ता और कम खर्च में सारी व्यवस्था हो जाती है, बुरे दिनों को भी हँसते–खेलते काट लेते हैं । उनकी प्रतिष्ठा बढ़ती है और किसी को उन पर आक्रमण करने का साहस नहीं होता । कोई दुस्साहस करता भी है तो उसे उस संगठित कुटुंब के सामने मुँह की खानी पड़ती है ।

जिन परिवारों में आपसी ईर्ष्या, द्वेष, तिरस्कार, मनोमालिन्य एवं विरोध के भाव रहते हैं, जहाँ लड़ाई–झगड़ा, कलह, चोरी, दुराचार के दृश्य दिखाई देते हैं, बड़ा छोटों को दबाता है और छोटा बड़ों की इज्जत नहीं करता, चोरी और अपना–अपना स्वार्थ साधन करने की नीति पर जहाँ सब लोग चलते हैं, सामूहिक लाभ और गृह व्यवस्था की ओर ध्यान नहीं देते वह परिवार जल्दी ही नष्ट हो जाता है । उसकी प्रतिष्ठा धूल में मिल जाती है अच्छी आमदनी होने पर भी पूरे नहीं पड़ते, बाहर के लोग उन पर हँसते हैं । चुगलखोर और स्वार्थी लोग ऐसे ही परिवारों में विरोध डालकर अपना उल्लू सीधा करते हैं । स्वार्थ, द्वेष और ईर्ष्या के कारण वे शीघ्र ही एक दूसरे से अलग हो जाते हैं और बुहारी में से बिखरी हुई सीकों की तरह तथा माला में से टूटे हुए मोतियों की भाँति उस परिवार के सदस्य दुर्गति को प्राप्त होते हैं ।

पारिवारिक अशांति का मुख्य कारण लोगों की कुबुद्धि है । अन्य कारणों को तो आसानी से सुलझाया जा सकता है, पर कुबुद्धि रूपी पिशाचिनी ऐसी प्रचंड है कि यह छुड़ाए नहीं छूटती । जिसके पीछे यह दुष्टा लग जाती है उसे चैन नहीं लेने देती और उसके समीप रहने वाले संबंधित लोग भी त्रास पाते हैं । घर में एक दो आदमी भी कुबुद्धि के हों तो वे शांतिप्रिय लोगों को भी चैन से नहीं बैठने देते और अकारण सबको दुखी होना पड़ता है ।

गायत्री उपासना करने वालों की बुद्धि शुद्धि होती है । जिस घर में गायत्री की पूजा, उपासना, यज्ञ, स्वाध्याय, जप, तप आदि का आयोजन होता रहता है, वहाँ सद्बुद्धि का स्वाभाविक प्रकाश होता है और उस परिवार में विघटनकारी तत्व एवं दुर्गुण अपने आप कम होते हैं । ऐसे धार्मिक परिवारों में सदा सब प्रकार की शांति विराजती देखी जाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

२३. परम प्रिय पुत्रियाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

२३-परम प्रिय पुत्रियाँ

पिता को पुत्र और माता को पुत्रियाँ अधिक प्यारी होती हैं । नारी हृदय को जितनी अच्छी तरह नारी समझती है उतना नर नहीं समझता । गायत्री माता को अपनी पुत्रियाँ परमप्रिय हैं । उनकी स्वल्प साधना का भी परम करुणामयी माता पर विशेष प्रभाव होता है । स्त्रियों में स्वभावतः कोमलता, सात्विकता और भक्ति भावना का अंश अधिक होता है इसलिए वे माता की कृपा और भी शीघ्र प्राप्त कर सकती हैं ।

पुरुषों की भाँति स्त्रियों को भी गायत्री साधना का अधिकार है । माता के लिए पुत्र और पुत्रियाँ दोनों ही प्रिय हैं, दोनों ही उसकी आँखों के तारे हैं । वे दोनों को ही समान प्रेम से अपनी गोदी में बिठाती हैं । आत्मा को परमात्मा से मिलाने वाली गायत्री रूपी सीढ़ी पर चढ़ने का पुरुषों की भाँति स्त्रियों को भी अधिकार है ।

प्राचीनकाल में अनेक महिलाओं को गायत्री उपासना द्वारा परम सिद्धावस्था की प्राप्ति हुई थी । अब भी अनेक महिलाएँ माता की उपासना करके आत्मोन्नति, सांसारिक सुख समृद्धि की प्राप्ति एवं अनेक आपत्तियों से छुटकारा पाने की प्रसन्नता अनुभव कर रही हैं । विधवा बहिनों के लिए तो गायत्री साधना एक तपश्चर्या है। इससे उनके मनोविकार शांत होते हैं । शोक वियोग की जलन बुझती है और बुद्धि में सात्विकता आने से साध्वी जैसा ईश्वर परायण जीवन बनाना सुगम हो जाता है ।

गायत्री उपासना करने वाली देवियों का जीवन बड़ा सुख शांतिमय बनता है । उत्तम स्वास्थ्य, मुख पर ओज, संतान की सुख–शांति, अविचल सुहाग, बुरे स्वभाव का सुधार, कुमारियों को उत्तम घर–वर की संभावना, दरिद्रता का निवारण, पति और पितृकुलों का मंगल, प्रतिष्ठा वृद्धि, पति का प्रेम, गृह दशा, भूत–बाधा आदि उलझनों का निवारण आदि अनेकों लाभ मिलते हैं, सांसारिक कठिनाइयाँ दूर होती हैं । इसके अतिरिक्त उनकी आत्मिक प्रगति होती चलती है, जिससे परलोक में दिव्य सुख, आगामी जन्म में राजसी वैभव तथा स्वर्ग एवं जीवन मुक्ति का द्वार खुलता है ।

कुमारियाँ, सधवाएँ, विधवाएँ, वृद्धाएँ सभी श्रेणी की स्त्रियाँ गायत्री माता की पूजा, उपासना करके स्वयं सुखी बन सकती हैं और अपने परिवार को सुखी बना सकती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

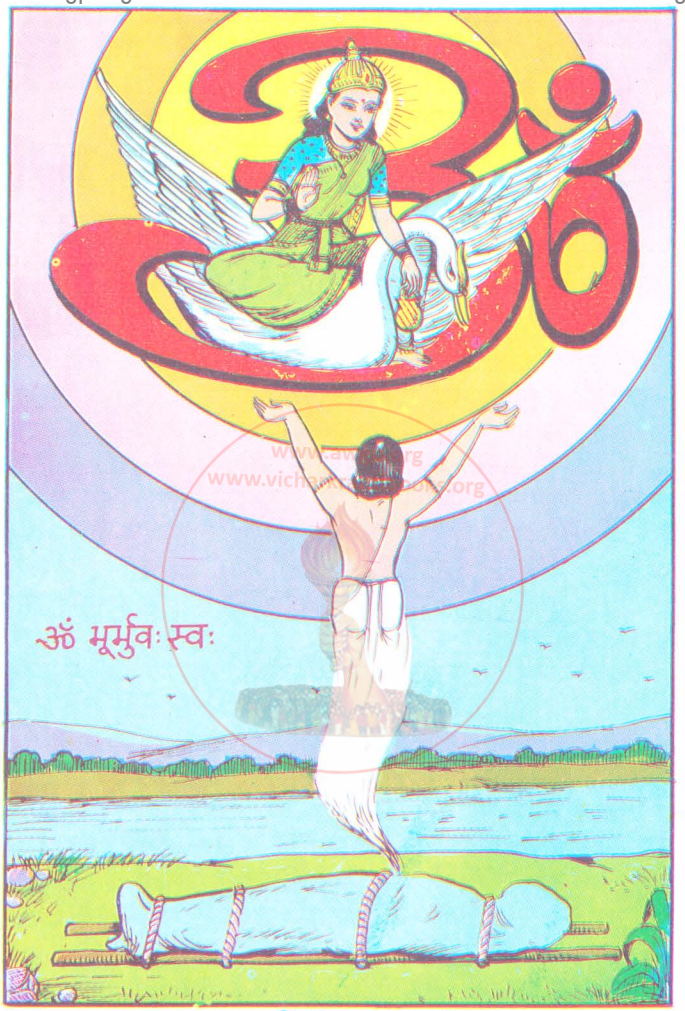

२४ सद्गति और जीवन मुक्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

२५-सद्गति और जीवन-मुक्ति

आत्मा को परमात्मा में मिला देना, जोड़ देना, यही योग का उद्देश्य है । परमात्मा से बिछड़ी हुई आत्मा जब तक अपने उद्गम केंद्र में नहीं मिल जाती, तब तक वह माता से बिछड़े बच्चे की तरह दुखी और अशांत रहती है । जन्म–मरण के चक्र में नाचता हुआ जीव चौरासी लाख यौनियों में फिरता रहता है और नाना प्रकार के त्रास सहता हुआ वासना और कामना के संस्कारों में बँधकर घिसटता रहता है ।

इस दुरव्यवस्था से त्राण पाने के लिए आध्यात्मिक साधना का पथ है । योगी लोग संसार का त्याग करके अत्यंत कष्ट साध्य तपश्चर्याएँ करते हैं, जिससे भव–बंधनों को कटा कर परमात्मा को प्राप्त कर सकें । सत्संग, स्वाध्याय, कथा, जप, यज्ञ, तीर्थ, दान आदि में यही उद्देश्य प्रधान रहता है कि बंधनों से छुटकारा प्राप्त करके आत्मा अपने उद्गम केंद्र परमात्मा का साक्षात्कार कर सके, उसमें लीन हो सके । यही जीवन का परम लक्ष्य है । मुक्ति को ही सबसे बड़ा पुरुषार्थ माना गया है । जिसने यह सफलता प्राप्त कर ली, समझना चाहिए कि उसने जीवन लाभ पा लिया, वह धन्य हो गया ।

ऊर्ध्वगति के लिए जितने भी साधन हैं उनमें गायत्री उपासना सर्वश्रेष्ठ है । जैसे बँधी हुई कली सूर्य की उष्णता पाकर आप खुलने लगती और थोड़े ही काल में सुविकसित पुष्प बन जाती है उसी प्रकार आत्मा के बंधन भी गायत्री से अपने आप खुलने लगते हैं और अंतःभूमिका विकसित होकर कुछ समय में उस स्थिति पर पहुँच जाती है, जिसे परहंस गति, सिद्धावस्था, समाधि, आत्म साक्षात्कार, बंधनमुक्ति, ईश्वर प्राप्ति, ब्रह्म निर्वाण या परमानंद कहते हैं ।

सदन कसाई, गणिका, अजामिल, हिरण्यकशिपु आदि दुष्टों का उद्धार हुआ तथा शबरी, अहिल्या, द्रौपदी, वृन्दा आदि नारियाँ और जटायु, निषाद, नरसी जैसे साधारण श्रेणी के जीव सद्गति को प्राप्त हुए । ऐसी भगवत्कृपा, जिससे स्वल्प प्रयास में ही जीव तर जाए, गायत्री माता के अनुग्रह से प्राप्त हो सकती है ।

चित्र में पंचाक्षरी गायत्री

इस पुस्तक में चित्रों के साथ पूरा गायत्री मंत्र न देकर स्थानाभाव से संक्षिप्त पंचाक्षरी गायत्री (ॐ भूर्भुवः स्वः) ही दिया गया है । पंचाक्षरी से ही पूर्ण मंत्र का उद्भव हुआ है इसलिए मूलमंत्र भी वही है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

मिशन की पत्रिकाएँ

(१) **अखण्ड ज्योति** (मासिक)

(धर्म एवं अध्यात्म के तत्त्वज्ञान का विज्ञान एवं तर्क- तथ्य- प्रमाण की कसौटी पर खरा चिंतन)

वार्षिक शुल्क-150.00, आजीवन शुल्क-3000.00 रुपया।

अखण्ड ज्योति अंग्रेजी (द्वि-मासिक)

वार्षिक शुल्क-100.00 रुपया

पता : अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा-281003

फोन : (0565) 2403940

(२) **युग निर्माण योजना** (मासिक)

(व्यक्ति, परिवार, समाज निर्माण एवं सात आंदोलनों की मार्गदर्शक पत्रिका)

वार्षिक शुल्क-75.00, आजीवन शुल्क-1500.00 रुपया।

युग शक्ति गायत्री (गुजराती मासिक)

(गायत्री महाविज्ञान, धर्म, अध्यात्म एवं युगानुकूल विचार परिवर्तन का मार्गदर्शन)

वार्षिक शुल्क-125.00, आजीवन शुल्क-2500.00 रुपया।

पता : युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा-3

फोन : (0565) 2530128, 2530399

फैक्स : (0565) 2530200

(३) **प्रज्ञा अभियान** (पाक्षिक)

(युग निर्माण मिशन के क्रियाकलापों एवं मार्गदर्शन का समाचार-पत्र)

वार्षिक शुल्क-40.00 रुपया।

पाक्षिक वीडियो पत्रिका : युग प्रवाह

(युग निर्माण मिशन के प्रमुख क्रियाकलापों की दृश्य-श्रव्य जानकारी)

वार्षिक शुल्क-500.00 रुपया।

पता : शांतिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड) फोन : 01334-260602

12/-

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें : http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at

www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org